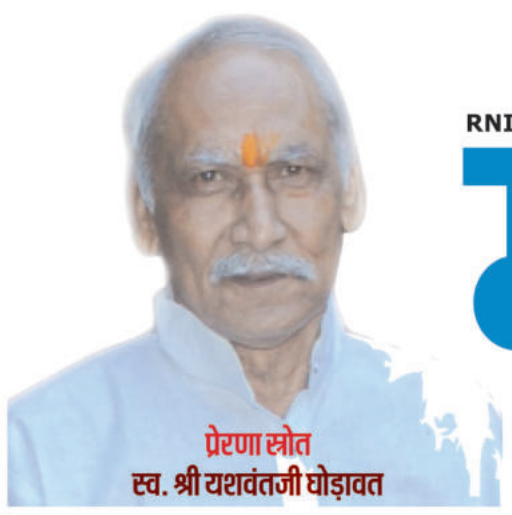
प्रेरणा स्रोत
स्व. श्री यशवंतजी घोड़ावत

RNI No. MPHIN/2018/76422

बेबाकी के साथ...सच

माही की गूंज

Www.mahikigunj.in, Email-mahikigunj@gmail.com

सुविचार

लोहा गरम भले ही हो जाए पर हथौड़ा तो ठंडा रह कर ही काम कर सकता है।

सरदार वल्लभ भाई पटेल

वर्ष-07, अंक - 42 (साप्ताहिक) | खवासा, गुरूवार 17 जुलाई 2025 | पृष्ठ-8, मूल्य -5 रुपए

अभिव्यक्ति की आजादी: सोशल मीडिया के लिए गाइड लाइन जरूरी

माही की गूंज, संजय भटेवरा।

आप सड़क पर लाठी घूमाकर चलने के लिए स्वतंत्र है बशर्त जब तक किसी की नाक न हो। कहने का तात्पर्य है आपकी आजादी दूसरों के लिए जोखिम नहीं होना चाहिए ऐसे ही मामले को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने सख्त टिप्पणी की है। आप, अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर कुछ भी (जो मन में आए) नहीं कह व कर सकते हैं। उसके लिए भी संविधान में कुछ नियम बनाए गए हैं। इस प्रकार के आचरण को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने सवाल उठाए हैं तथा ऑनलाइन सामग्री को रेगुलेट करने के लिए कुछ दिशा निर्देश तय करने के संकेत दिए हैं। कोर्ट ने ऑनलाइन सामग्री को रेगुलेट करने की जरूरत पर बल देते हुए कहा कि, प्रस्तावित तंत्र संवैधानिक सिद्धांतों के अनुरूप होना चाहिए। जिसमें स्वतंत्रता, अधिकारो व कर्तव्यों के बीच संतुलन स्थापित हो। शीर्ष कोर्ट ने जीवन और स्वतंत्रता के मौलिक अधिकारों को अभिव्यक्ति की आजादी के ऊपर बताया है। इसका अर्थ यह है कि, आपकी अभिव्यक्ति की आजादी दूसरों की स्वतंत्रता और अधिकार में बाधक नहीं बनना चाहिए। यानी अगर आप सड़क पर लाठी घूमाते हुए चलते हैं तो किसी व्यक्ति की नाक (स्वतंत्रता) आड़े नहीं आना चाहिए। क्योंकि आपकी लाठी घुमाने की स्वतंत्रता से ज्यादा उस व्यक्ति की नाक मायने रखती है।

वही एक अन्य मामले में सोशल मीडिया पर अनियंत्रित व्यवहार और अभिव्यक्ति पर भी चिंता जताते हुए कहा है कि, सोशल मीडिया पर भी गाइडलाइन की आवश्यकता है। आमतौर पर यह देखा जा रहा है कि, सोशल मीडिया पर लोग किसी को भी कुछ भी कह देते हैं। ऐसे में इंटरनेट मीडिया पर लगाम जरूरी है। कोर्ट ने मध्य प्रदेश के कार्टूनिस्ट हेमंत मालवीय के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और आरएसएस पर बनाए गए आपत्तिजनक कार्टून को अभिव्यक्ति की आजादी का दुरुपयोग होना कहा था। इसके साथ ही स्टेंडअप कॉमेडियन द्वारा कुछ भी कहने पर सवाल उठाते हुए सख्त टिप्पणी की थी।

सोशल मीडिया पर व्यापक विचार विमर्श जरूरी

कोर्ट ने केंद्र सरकार से कहा है कि, वह अभिव्यक्ति की आजादी और दूसरे के अधिकारों व कर्तव्यों का संतुलन बनाते हुए इंटरनेट मीडिया के लिए गाइडलाइन तैयार करें। केंद्र सरकार की ओर से इसके लिए कुछ समय मांगा गया और कहा कि, इसके लिए व्यापक विचार विमर्श की आवश्यकता है। इसके साथ ही बनाई गई गाइडलाइन का कार्यान्वयन सबसे मुश्किल होगा। कोर्ट ने सरकार से कहा है कि, एक की स्वतंत्रता दूसरे के अधिकारों में बाधक नहीं बनना चाहिए। गाइडलाइन संवैधानिक सिद्धांतों के अनुरूप होनी चाहिए। जिसमें लोगों की स्वतंत्रता, अधिकारों व कर्तव्यों के बीच संतुलन होना चाहिए। गाइड लाइन को पहले कोर्ट चेक करेगा। इसके लिए सरकार सभी हित धारकों से चर्चा करें और सभी हितधारक भी अपना नजरिया सरकार को बताए ताकि एक व्यापक गाइडलाइन बनाई जा सके। कोर्ट ने कहा है कि, अनुच्छेद 19 (अभिव्यक्ति की आजादी का अधिकार) अनुच्छेद 21 (जीवन और स्वतंत्रता का अधिकार) से ऊपर नहीं हो सकता है। अनुच्छेद 19 और अनुच्छेद 21 में प्रतिस्पर्धा होने पर अनुच्छेद 21 को अनुच्छेद 19 पर हावी होना होगा।

विदेशी तकनीक पर निर्भरता हमारी तैयारी को कमजोर करती है- सीडीएस

नई दिल्ली, एजेंसी।

प्रधान रक्षा अध्यक्ष (सीडीएस) जनरल अनिल चौहान ने कहा है कि भारत को अपनी सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए स्वदेशी क्षमताओं का विकास करना चाहिए। उन्होंने ऑपरेशन सिंदूर का उल्लेख करते हुए कहा कि पाकिस्तान की ओर से भारत के विरुद्ध भेजे गए मानवरहित यानों (ड्रोन) को भारतीय सेना ने पूरी तरह निष्क्रिय कर दिया और देश को कोई नुकसान नहीं हुआ।

दिल्ली में एक कार्यक्रम में बोलते हुए उन्होंने कहा कि भारतीय सेना ने इस्लामाबाद की ओर से भेजे गए इन मानवरहित यानों को गतिशील (काइनैटिक) और अगतिशील (नॉन काइनैटिक) तरीकों से नष्ट किया। 10 मई को 'ऑपरेशन सिंदूर' के दौरान पाकिस्तान ने जो बिना हथियार वाले यान भेजे थे, वे भारतीय सैन्य या नागरिक ढांचे को कोई नुकसान नहीं पहुंचा सके।

जनरल चौहान ने यह भी बताया कि कुछ यान बिना क्षति के बरामद किए गए हैं। उन्होंने कहा कि यह अभियान इस बात का प्रमाण है कि भारत में विकसित किए गए मानवरहित यान प्रतिरोधक प्रणाली (काउंटर यूएएस प्रणाली) देश की जमीनी जरूरतों के अनुसार बनाई गई है और सैन्य अभियानों में अत्यंत उपयोगी साबित हो रही है।

उन्होंने आगाह किया कि विदेशी तकनीक पर अत्यधिक निर्भरता हमारी तैयारियों को कमजोर बनाती है और उत्पादन क्षमता को सीमित करती है। इससे आवश्यक कलपुर्जों की समय पर उपलब्धता में भी बाधा आती है।

जनरल चौहान ने कहा कि आज के युद्ध को पुराने हथियारों से नहीं जीता जा सकता। आधुनिक युद्ध तकनीक-आधारित हो गया है और हमें इसी के अनुरूप तैयारी करनी चाहिए। राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजित डोभाल ने भी हाल ही में कहा था कि इस कार्रवाई में भारत को कोई नुकसान नहीं हुआ। उन्होंने कहा था, पूरा अभियान केवल 23 मिनट में सम्पन्न हुआ। यदि किसी को लगता है कि भारत को कहीं भी नुकसान हुआ है तो कृपया कोई एक तस्वीर दिखा दें।

उन्होंने बताया कि ऑपरेशन के दौरान ब्रह्मोस प्रक्षेपास्त्र से लेकर राडार तक, अधिकांश प्रणाली स्वदेशी थीं।

विदेश नीति को बर्बाद करने का एक तमाशा चला रहे जयशंकर : राहुल गांधी

नई दिल्ली, एजेंसी।

लोकसभा में विपक्ष के नेता और कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने विदेश मंत्री एस. जयशंकर पर तीखा हमला करते हुए कहा है कि वह देश की विदेश नीति को बर्बाद करने के लिए एक तमाशा चला रहे हैं। यह टिप्पणी उस वक्त आई जब जयशंकर ने चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग से भेंट कर भारत-चीन संबंधों के हालिया घटनाक्रमों की जानकारी दी।

राहुल गांधी ने एक्स पर लिखा, मुझे लगता है कि अब चीनी विदेश मंत्री आएंगे और नरेंद्र मोदी को भारत-चीन संबंधों के हालिया घटनाक्रमों से अवगत कराएंगे। हमारे विदेश मंत्री अब भारत की विदेश नीति को बर्बाद करने के उद्देश्य से एक पूरा तमाशा चला रहे हैं।

बीजिंग में जिनपिंग के साथ भेंट के दौरान जयशंकर ने राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ओर से शुभकामनाएँ भी दीं।

एक्स पर अपनी पोस्ट में जयशंकर ने लिखा, मंगलवार सुबह बीजिंग में शंघाई सहयोग संगठन के अपने साथी विदेश मंत्रियों के साथ राष्ट्रपति जिनपिंग से भेंट की। राष्ट्रपति मुर्मू और प्रधानमंत्री मोदी की ओर से शुभकामनाएँ दीं। राष्ट्रपति शी को हमारे द्विपक्षीय संबंधों के हालिया घटनाक्रमों से अवगत कराया। हमने हमारे शीर्ष नेतृत्व के मार्गदर्शन को महत्वपूर्ण माना।

जयशंकर इन दिनों शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के विदेश मंत्रियों की बैठक में भाग लेने चीन की आधिकारिक यात्रा पर हैं। सोमवार को उन्होंने चीन के विदेश मंत्री वांग यी के साथ बातचीत की और द्विपक्षीय संबंधों को दूरदर्शी सोच के साथ मजबूत एवं रचनात्मक बनाने की आवश्यकता पर विचार-विमर्श किया।

हवाई पट्टी को छूकर फिर उड़ गया विमानः अटकी सांसें, तीन-चार चक्कर लगाने के बाद सुरक्षित उतरा

पटना।

पटना हवाई अड्डे पर मंगलवार रात एक गंभीर तकनीकी स्थिति ने यात्रियों के बीच कुछ देर के लिए घबराहट का माहौल बना दिया। दिल्ली से पटना आ रहा इंडिगो विमान संख्या 6ई2482 जब उतराव की प्रक्रिया में था, तभी अचानक हवाई पट्टी को छूकर पुनः उड़ गया। इस विमान में 173 यात्री सवार थे, जिनकी कुछ पल के लिए सांसें थम सी गईं।

प्राप्त जानकारी के अनुसार, रात लगभग 9 बजे विमान का उतराव तय था, लेकिन यह विमान निर्धारित स्थान से आगे निकल गया। पटना हवाई अड्डे की हवाई पट्टी देश के अन्य प्रमुख हवाई अड्डों की तुलना में छोटी है। पायलट को संदेह हुआ कि विमान को सुरक्षित रूप से रोकना कठिन हो सकता है, अतः उन्होंने सतर्कता बरतते हुए विमान को दोबारा आकाश में उड़ाया।

इसके बाद विमान ने आकाश में तीन से चार चक्कर लगाए और अंततः सुरक्षित उतराव किया। यात्रियों ने राहत की सांस ली। घटना के समय यात्रियों में भ्रम और घबराहट का वातावरण बन गया था। कुछ यात्रियों को लगा कि सामने कोई अन्य विमान है या कोई आपात स्थिति उत्पन्न हो गई है।

हालांकि, विमान में तैनात कर्मियों ने स्थिति को तुरंत संभालते हुए यात्रियों को भरोसा दिलाया कि किसी प्रकार का संकट नहीं है और तकनीकी कारणों से विमान को फिर से उड़ाया गया है। उन्होंने यह भी आश्वासन दिया कि कुछ ही मिनटों में विमान का सुरक्षित उतराव हो जाएगा।

गौरतलब है कि पटना हवाई अड्डे की हवाई पट्टी की वर्तमान लंबाई 2,072.64 मीटर है, जो बड़े विमानों के उतराव के लिए सीमित मानी जाती है। केंद्र सरकार द्वारा जारी सुरक्षा परामर्श के तहत इस पट्टी को 3,657.6 मीटर तक विस्तारित करने की योजना पर कार्य चल रहा है। यह परामर्श अहमदाबाद हवाई अड्डे पर हाल ही में हुए विमान हादसे के बाद जारी किया गया था।

विमानन विशेषज्ञों का कहना है कि पायलट द्वारा उठाया गया कदम पूर्णतः सुरक्षा मानकों के अनुरूप था। यह घटना इस ओर संकेत करती है कि देश के छोटे हवाई अड्डों के आधुनिकीकरण और सुरक्षा में सुधार की आवश्यकता अब और अधिक जरूरी हो गई है।

सरकार को घेरने की रणनीति में जुटी कांग्रेस

नई दिल्ली, एजेंसी।

21 जुलाई से संसद का वर्षा सत्र शुरू होने जा रहा है। विपक्ष के तेवरों को देखकर यह स्पष्ट है कि यह सत्र गरमागरम और विवादों से भरा रहेगा। इसी को लेकर कांग्रेस ने अभी से रणनीति तैयार कर ली है। मंगलवार को इस संबंध में कांग्रेस की एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित हुई, जिसकी अध्यक्षता सोनिया गांधी ने की। बैठक में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी सहित कई वरिष्ठ नेता मौजूद थे, लेकिन सांसद शशि थरूर की अनुपस्थिति सभी के लिए चर्चा का विषय बन गई।

कांग्रेस ने निर्णय लिया है कि वह वर्षा सत्र के दौरान पहलगाम में हुए आतंकी हमले, 'ऑपरेशन सिंदूर' को रोके जाने और बिहार में मतदाता सूची के विशेष पुनरीक्षण अभियान जैसे मुद्दों को प्रमुखता से उठाएगी।

इस बैठक में राज्यसभा में कांग्रेस के उपनेता प्रमोद तिवारी, पार्टी महासचिव जयराम रमेश, लोकसभा में कांग्रेस के मुख्य सचेतक कोडीकुन्नील सुरेश और सचेतक मणिकम टैगोर सहित कई प्रमुख नेता मौजूद थे।

हालांकि, शशि थरूर की गैरमौजूदगी को लेकर सवाल उठे कि जब कांग्रेस की प्रमुख टीम सरकार के खिलाफ रणनीति बना रही थी, तब वे कहाँ थे? जानकारी के अनुसार वे देश से बाहर हैं और पार्टी को पहले ही इसकी सूचना दे दी गई थी।

बैठक के बाद उपनेता प्रमोद तिवारी ने कहा कि देश यह जानना चाहता है कि पहलगाम में 26 महिलाओं की मांग का सिंदूर उजाड़ने वाले आतंकी अब तक क्यों नहीं पकड़े गए? उन्होंने यह भी कहा कि यह गंभीर मुद्दा है कि क्या 'ऑपरेशन सिंदूर' अमेरिका के दबाव में रोका गया?

स्वर्ण मंदिर को उड़ाने की धमकी, एसजीपीसी और पुलिस सतर्क

अमृतसर,।

पंजाब में स्वर्ण मंदिर को लगातार तीसरे दिन बम से उड़ाने की धमकी मिली है। यह धमकी शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी (एसजीपीसी) की ईमेल पर भेजी गई। ईमेल में दावा किया गया कि पाइपों में आरडीएक्स भरकर मंदिर के भीतर विस्फोट किया जाएगा। सुरक्षा कारणों से ईमेल में लिखे गए शब्दों को सार्वजनिक नहीं किया गया है।

जांच के लिए खोजी कुत्तों की टीम और बम निरोधक दस्ता मौके पर पहुंच गया है। वहीं, एसजीपीसी और अमृतसर पुलिस पूरी तरह सतर्क हैं। सीमा सुरक्षा बल और पुलिस के विशेष दस्ते तैनात किए गए हैं। हर आने-जाने वाले व्यक्ति पर कड़ी निगरानी रखी जा रही है।

इससे पहले सोमवार और मंगलवार को भी मंदिर को उड़ाने की धमकियाँ मिल चुकी हैं। एसजीपीसी के प्रधान हरजिंदर सिंह धामी ने बताया कि 15 जुलाई को भेजी गई दूसरी ईमेल केरल के मुख्यमंत्री और एक पूर्व प्रधान न्यायाधीश की फर्जी पहचान से भेजी गई थी। बुधवार सुबह आसिफ कपूर नामक ईमेल पते से फिर एक ईमेल प्राप्त हुई, जो मुख्यमंत्री भगवंत मान को भी भेजी गई।

हरजिंदर सिंह धामी ने कहा कि, लंबे समय से आस्था के इस केंद्र को निशाना बनाया जा रहा है। 1984 में दरबार साहिब को भारी क्षति पहुंची थी। गुरुओं के उपदेश कुछ लोगों को स्वीकार नहीं हो रहे, इसलिए वे ऐसे घिनौने प्रयास कर रहे हैं।

उन्होंने सवाल उठाया कि यदि यह ईमेल सांसदों और मुख्यमंत्रियों तक भेजी गई है, तो अब तक सरकार ने कोई ठोस कार्यवाही क्यों नहीं की? यह सिख समाज की केंद्रीय संस्था है और इसकी सुरक्षा को खतरे में नहीं डाला जा सकता। क्या यह संगत के आगमन को कम करने की कोई साजिश है? जांच होनी चाहिए।

एसजीपीसी के सचिव ने कहा कि कुछ असामाजिक तत्वों द्वारा यह धमकियाँ दी जा रही हैं, जिनका कोई धर्म नहीं होता। उनका उद्देश्य लोगों में भय फैलाना है। फिर भी संगत पहले की तरह श्रद्धापूर्वक माथा टेकने आ रही है और कीर्तन सुन रही है।

उन्होंने संगत से अपील की कि यह गुरुओं का स्थान है, और यहां ऐसा सोचना भी पाप है। जिसने भी यह धमकी दी है, सरकार को उसे ढूंढकर सख्त से सख्त सज़ा देनी चाहिए। यह स्थान शांति और एकता का प्रतीक है, जहां सभी धर्मों के लोग सिर झुकाने आते हैं।

संसद के मानसून सत्र में आ सकते हैं बड़े विधेयक

नई दिल्ली, एजेंसी।

21 जुलाई से आरंभ हो रहे संसद के मानसून सत्र में केंद्र सरकार आठ नए विधेयक प्रस्तुत करने की तैयारी कर रही है। इसके अतिरिक्त, सरकार आयकर संबंधी संशोधन विधेयक को भी संसद की स्वीकृति दिलवाने की योजना में है।

सूत्रों के अनुसार, इस सत्र में न्यायपालिका से जुड़ा एक बड़ा मामला भी संसद में आ सकता है। उच्च न्यायालय के न्यायाधीश यशवंत वर्मा के आवास से भारी मात्रा में नकद राशि बरामद होने के बाद उनके विरुद्ध महाभियोग प्रस्ताव लाया जा सकता है। इससे न्यायाधीश वर्मा संदेह के घेरे में आ गए हैं।

इस सत्र के दौरान खेलों के संचालन में नैतिकता और सुशासन सुनिश्चित करने के लिए ÷राष्ट्रीय खेल प्रशासन विधेयक÷ और भू-वैज्ञानिक धरोहरों के संरक्षण हेतु ÷जियो विरासत स्थल तथा भू-अवशेष (संरक्षण और रख-रखाव) विधेयक, 2025÷ भी प्रस्तुत किए जाएंगे।

यह विधेयक देश में भू-वैज्ञानिक महत्व के स्थलों और अवशेषों की पहचान, सुरक्षा और संरक्षण की दिशा में एक अहम कदम होगा। इससे भूविज्ञान से जुड़ी शिक्षा, अनुसंधान, जागरूकता और पर्यटन को भी बढ़ावा मिलेगा। वहीं, राष्ट्रीय खेल शासन विधेयक, 2025 के माध्यम से देश में खेल संघों के संचालन के लिए एक नैतिक, कानूनी और संगठित ढांचा तैयार किया जाएगा। यह ढांचा ओलंपिक और पैरा ओलंपिक के नियमों, अंतरराष्ट्रीय सर्वोत्तम मानकों तथा भारतीय कानूनों पर आधारित होगा। लोकसभा की एक आंतरिक सूचना के अनुसार, इस सत्र में कुल 12 विधेयकों को शामिल किया गया है, जिनमें कुछ पहले से संसद में प्रस्तुत किए जा चुके हैं और कुछ संसदीय समितियों के विचाराधीन हैं।

सरकार इस दौरान मणिपुर में राष्ट्रपति शासन की अवधि बढ़ाने के लिए भी संसद से अनुमति मांगेगी।

मध्यप्रदेश सरकार की महिलाओं के प्रति सजगता...!

2 मई को नाबालिग अगवा, 27 मई को कलेक्टर को शिकायत, 1 जून को गुमशुदगी, 10 जून को एसपी को शिकायत, नतीजा आज तक नाबालिग का पता नही

माही की गूंज, खवासा।

पंचायत से लेकर केंद्र तक भाजपा की सरकार है और सरकार का दावा है कि वह महिलाओं को लेकर सवेदनशील है और नाबालिग बच्चों की सुरक्षा के लिए तो अति सवेदनशील है। लेकिन सरकार के यह दावे जमीनी स्तर पर महज ही खोखले ही साबित हो रहे हैं। निर्भया कांड की तर्ज पर अपराध होने पर प्रदेश व केंद्र सरकार अपनी सजगता दिखाने का प्रयास करती और मीडिया भी ऐसे मामले को जब प्रकाशित करती है तो मानो देश में अन्य कोई मामले व घटनाएं होती ही नहीं ऐसा सामने आता है। बाकी जमीनी स्तर पर महिलाओं के शोषण संबंधित अपराध होते हैं तो ऐसे में पुलिस मामला तक दर्ज नहीं करती है।

मध्य प्रदेश के पश्चिमी छोर पर बसे झाबुआ जिले की बात करें तो यहां प्रतिदिन जिले के किसी न किसी एक चौकी या थाने में बालिक एवं नाबालिग लड़कियों के अगवा होने की शिकायते आती है लेकिन कुछेक मामले में ही अपराध दर्ज होते हैं। बाकी में पुलिस स्वयं यह प्रयास करती है कि, आपसी में भाजगडी हो जाए और पुलिस की भी अर्थ रूपी जेब भर जाए। इसलिए मामला दर्ज नहीं करती है। नतीजन ऐसे मामलों की बढ़ोतरी होती ही जा रही है। सबसे बड़ी चिंता यह है कि, सरकार भले महिला सुरक्षा संबंधित कई कानून बना ले लेकिन पुलिस अपने कानून से ही चलती है। नाबालिग को शोषण से बचाने के लिए सरकार ने भले ही पॉक्सो एक्ट लागू किया गया। उक्त पॉक्सो एक्ट में अपराध अनुसार अलग-अलग धाराओं में मामला दर्ज होता है। ऐसे में अगर कोई नाबालिग लड़की को कोई बालिक लड़का भगा ले जाता है और उसकी शिकायत नामजद होती है तो पुलिस को सर्वप्रथम संबंधित आरोपित के विरुद्ध

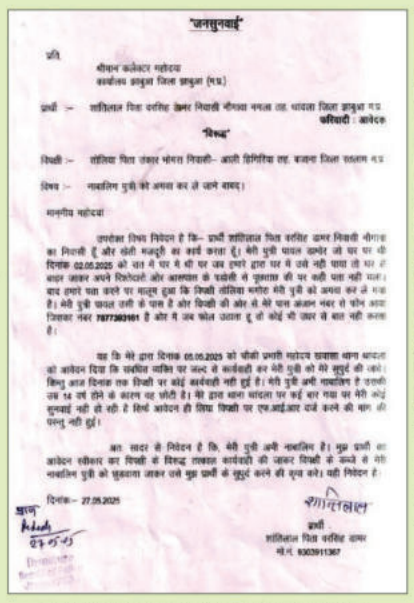

कलेक्टर को शिकायत के बाद नाबालिग की गुमशुदगी दर्ज।

पॉक्सो एक्ट में मामला दर्ज करना होता है। तथा सघन जांच के साथ अगवा हुई नाबालिग को कैसे भी करके लाया जाए और नाबालिग के बयान पर जिस प्रकार का शोषण हुआ है या नहीं हुआ है उक्त आधार अनुसार मामले में धाराओं की बढ़ोतरी की जाना होती है। लेकिन मध्य प्रदेश सरकार व सरकार की पुलिस की सजगता जमीनी स्तर पर शून्य ही है नतीजन अपराधों में बढ़ोतरी है।

थांदला थाने की खवासा चौकी की बात करें तो यहां की पुलिस ने ऐसे अपराधों को महज मजाक ही बना रखा है। एक 14 वर्षीय नाबालिग लड़की अपनी एक परिचित लड़की के साथ अगवा हो चुकी है। मामले में नाबालिग लड़की के

पिता शांतिलाल पिता वरसिंग डामोर निवासी नौगांवा नगला ने माही की गूंज कार्यालय आकर अपनी व्यथा बताई। शांतिलाल ने बताया कि, मेरी नाबालिग लड़की पायल डामोर 8वीं कक्षा में अध्ययनरत होकर उच्च अंक से उत्तीर्ण हुई है। मैं और मेरी पत्नी 15 अप्रैल 2025 को मेरी पुत्री पायल को मेरे माता-पिता के पास घर छोड़कर महिदपुर उज्जैन मजदूरी पर गए थे। 2 मई को रात्रि करीब 10 बजे मेरी लड़की कहीं चली गई है की सूचना मिलने पर 3 मई को हम बाइक से घर आए और मौखिक रूप से पुलिस को सूचना दी। वहीं आस-पास गांव में तलाश की लेकिन मेरी पुत्री कहीं भी नहीं मिली। सामने आया कि, हमारे पीपली फलिये की ही एक अन्य बालिग लड़की भी उसी रात से गायब है। पूछताछ में सामने आया कि, अन्य एक उस बालिग लड़की के साथ ही मेरी लड़की को बहला- फुसलाकर अगवा किया गया और तौलिया पिता ऊकार जाती भोगरा निवासी आली हिगिरिया तहसील बाजना जिला रतलाम के द्वारा अगवा किया गया है। जिसकी नामजद रिपोर्ट परिवार के साथ जाकर पुलिस चौकी खवासा में 5 मई को लिखित में की थी। लेकिन पुलिस द्वारा बेबुनियाद बातें कर मामला दर्ज नहीं किया गया और न ही मेरी लड़की को ढूंढने का प्रयास किया। जिसके बाद 27 मई को कलेक्टर जनसुनवाई में शिकायत की गई। उक्त शिकायत के बाद 1 जून को पुलिस ने गुमशुदगी दर्ज कर बीएनएस की धारा 137 (2) में मामला दर्ज किया। लेकिन पॉक्सो एक्ट का मामला दर्ज नहीं किया। उक्त गुमशुदगी के बाद भी पुलिस मेरी पुत्री को ढूंढकर नहीं लाई। 10 जून को इस संबंध में फिर एसपी को शिकायत की गई। लेकिन आज तक भी मेरी लड़की का कोई पता नहीं चला।

पुलिस पर यह भी आरोपः हम यहां फी बैठे हैं तो कोई छोरी हमारे पास क्यों नहीं आती...!

वहीं फरियादी की पत्नी, भाई राजू व राजू की पत्नी उर्फ पूर्व जनपद सदस्य पारु बाई ने खवासा पुलिस पर कई आरोप लगाए। जिसमें कहना है कि, पुलिस कहती है कि, गांव में से जो दूसरी बालिग

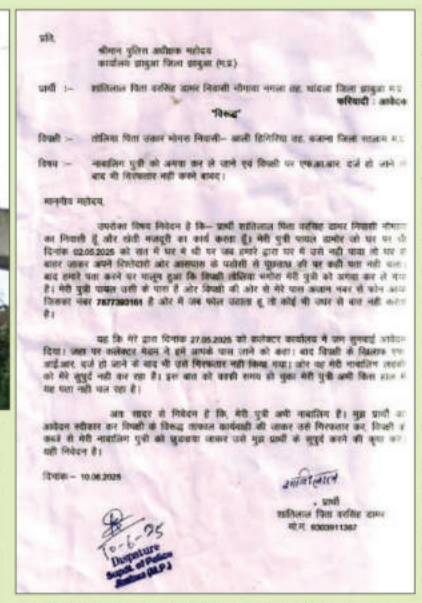

एसपी को शिकायत के बाद भी अब तक नाबालिग नही मिली और नही आरोपितो तक पहुची पुलिस।

लड़की गई है उनके समझौते हो गए हैं, तुम भी समझौता कर लो। वही पुलिस कहती है कि, क्या तुम्हारे कहने पर सामने वाले को पंखे पर लटका दूं। क्या, तुम मेरे अधिकारी हो...? जो पूछने आते हो कि मामले में क्या हुआ...? एक साल से 10 साल भी लग जाए ऐसे केश में। ऐसे कई केश हमारे पास पड़े हैं। उक्त आरोप प्रधान आरक्षक पर लगाए। वहीं उक्त पीड़ित परिजनों ने चौकी प्रभारी एडमिरल तोमर पर आरोप लगाया कि, चौकी प्रभारी हमारी लड़की ढूंढने की बजाय कहते हैं कि, आपकी छोरिये जाने कहां-कहां चली जाती है लेकिन हम यहां फी बैठे हैं तो हमारे पास क्यों कोई नहीं आती है...? और साहब कहते हैं आपकी लड़की नौगांव नगला से नहीं भागी जहां मजदूरी करने गए थे वहां से भागी है। और माथे हमारे पड़ रहे हैं।

पीड़ित परिजनों का कहना है कि, हम किसी प्रकार का समझौता नहीं चाहते हैं, हमारी लड़की पढ़ाई में होनहार है और 14 वर्ष की नाबालिग होकर उसे बहला फुसलाकर अगवा किया गया है। मामले में पॉक्सो एक्ट का मामला पुलिस दर्ज कर हमारी लड़की को हमें सुपुर्द करें और आरोपियों को सजा दिलाए।

पुलिस बता रही अपनी नाकामी

कहते हैं पुलिस चाहे तो अपराधियों को पाताल में से भी खोज कर ले आए। परंतु पुलिस कार्रवाई अब ऐसी हो गई है कि, जो अर्थ लाभ के साथ कार्रवाई करने लगी है। जिसमें बिना अपराध के भी अपराध दर्ज कर देती है तो कही बेगुनाह को बिना जांच के ही गुनेहगार बना देती है। वहीं अपराध होने के बाद पुलिस चाहे तो अपराध दर्ज नहीं करती है और गोल-मोल अपराध दर्ज कर लेती है तो उक्त मामले की तर्ज पर पीड़ितो को बेबुनियाद बातें कर परेशान कर देते हैं।

उपरोक्त मामले में चौकी प्रभारी एडमिरल तोमर से चर्चा की तो सर्वप्रथम कहने लगे कि, हमसे जानकारी मांगने की क्या आवश्यकता है ? आपके पास जो आए हैं वही पूरी जानकारी आपको दे देंगे। वहीं पायल को ढूंढने की बात पर साहब ने कहा, मैंने छोरी को ढूंढने में मेरे निजी खर्च 50 हजार रूपये कर दिये हैं पर छोरी नहीं मिली। ढूंढने का प्रयास पुलिस कर रही है। हमारी पुलिस जो यह कह रही है कि, 50 हजार रूपये निजी खर्च करने के बाद भी नहीं नाबालिग पीड़िता को ट्रेस कर पाई और न ही आरोपितो तक पहुंच पाई है। पुलिस का उक्त बयान हीं उनकी नाकामी को ही दर्शा रहा है।

प्रथम सोमवार को भगवान पशुपतिनाथ मंदिर में उमड़ा भक्तों का सैलाब

माही की गूंज, मंदसौर।

मंदसौर के पशुपतिनाथ मंदिर के गर्भ गृह में विराजित विश्वप्रसिद्ध अष्टमुखी भगवान पशुपतिनाथ की नैना विराम प्रतिमा को निहारने के लिए सैकड़ो की तादात में श्रद्धालु मंदिर पहुंचे।

सोमवार को पशुपतिनाथ की अष्ट मुख वाली प्रतिमा को गुलाब, गेंदा और कमल के फूलों से सजाया गया। अनुमान है कि सावन के पहले सोमवार को सुबह से लेकर लगभग शाम तक लगभग 25 हजार लोग दर्शनार्थी बाबा पशुपतिनाथ के दर्शन पहुंचे। पशुपतिनाथ की प्रतिमा पूरे विश्व की सबसे अद्भुत प्रतिमा मानी जाती है, इस संसार की यह एकमात्र ऐसी प्रतिमा है जिसके आठ मुख हैं जो अलग-अलग मुद्रा में दिखाई देते हैं। यही वजह है कि शिव भक्तों के लिए यह आकर्षण का केंद्र बनी हुई है।

सावन के पहले सोमवार भीड़ ज्यादा होने की वजह से श्रद्धालुओं को गर्भ गृह में अंदर जाने की अनुमति नहीं दी गई, दर्शनार्थी बाहर से ही कतारबद्ध तरीके से बाबा के दर्शन कर रहे हैं। तो सुरक्षा को मद्देनजर रखते हुए पुलिस प्रशासन भी पूरी मुस्तैद नजर आ रहा है। मंदिर पुजारी राकेश भट्ट ने बताया कि सावन के पहले सोमवार को प्रातः काल से ही बड़ी संख्या में भक्त भगवान के दर्शन के लिए पधार रहे हैं। पशुपतिनाथ प्रतिमा का जलाभिषेक और फिर दुध, दही, घी से विशेष आकर्षक श्रृंगार किया गया है।

हद है: मंत्री भूरिया के कार्यालय पर उदघाटन के बाद से लगे ताले

माही की गूंज, पेटलावद।

कुछ माह पूर्व लंबे समय बाद भाजपा के क्षेत्रीय विधायक का कार्यालय खुला था ,जहा न केवल आम जनता बल्कि भाजपाई नेताओं और कार्यकर्ताओ को उम्मीद थी कि यहां क्षेत्र के विधायक समस्याओं के निराकरण के लिए उपलब्ध रहेंगे। मामला पेटलावद विधानसभा का है जहां से विधायक निर्मला भूरिया है और वर्तमान में मध्यप्रदेश सरकार में केबिनेट मंत्री है और महिला बाल विकास जैसा बड़ा मंत्रालय उनके पास है । पेटलावद क्षेत्र के भाजपा नेता और आम जनता को अपने ही विधायक से मिलने के लिए झाबुआ उनके निवास पर जाना पड़ता है ,लंबे समय से मांग थी कि क्षेत्र में विधायक का कार्यालय हो जहा क्षेत्र की जनता अपनी समस्या और मांगे लेकर विधायक या उन तक पहुँचने के योग्य माध्यम तक पहुँच सके। जनता की मांग को देखते हुवे मंत्री भूरिया ने लगभग तीन माह पूर्व माही कालोनी के एक सरकारी आवास में कार्यालय का उदघाटन धूमधाम से किया था।

कार्यालय बना चारागाह, मंत्री का पोस्टर तक फटा

उदघाटन के बाद से अब तक नही खुला कार्यालय

कार्यालय के उदघाटन के बाद भाजपा के कार्यकर्ताओं और आम जनता को उस समय झटका लगा जब उदघाटन के बाद ये कार्यालय एक बार भी नही खुला । कई बार लोग अपनी समस्या को लेकर इस उम्मीद से कार्यालय पहुँचे की यहां कोई मिलेगा लैकिन लोग कार्यालय पर ताला ओर उसकी स्थिति देख कर निराश वायस लौट गए। आलम ये है कि कार्यालय पर लगा बेनर जिंसमे मंत्री महोदया का फोटो है वो पूरी तरह से फटा पड़ा है । कार्यालय पर कोई व्यक्ति तो नही रहता लेकिन यहाँ पर बड़ी संख्या भेड़ बकरियां चरती दिखाई देती हैं।

सांसद अनिता चौहान के झाबुआ कार्यालय से प्रेरित

क्षेत्र की सांसद अनिता नागरसिंह चौहान ने भाजपा नेताओं और कार्यकर्ताओं से मिलने के लिए जिला मुख्यालय पर कार्यालय खोला जहा समय समय पर जाकर नेताओं से मुलाकात और समस्या सुनती दिखाई दी । मीडिया और शोसल मीडिया पर सांसद के इस प्रयास को काफी सराहना भी मिली । कही न कही उसी से प्रेरित मंत्री भूरिया ने अपनी विधानसभा क्षेत्र में कार्यालय खोला लेकिन सांसद की तरह वो आम जनता और अपने ही नेताओं के बीच कार्यालय उदघाटन के बाद से उपस्थित नही हो सकी । अब लोग ओर खुद भाजपा के नेता दबी जुबान से कहने लगे हैं कि हाथी के दांत खाने के और दिखने के और होते हैं ।

कथा में भगवान शिव के स्वरूप का वर्णन

माही की गूंज ,पेटलावद।

उपासक को निष्काम होकर मोक्ष की प्राप्ति के लिए भगवान शिव की पूजा करनी चाहिए।भक्तिभाव से विधिपूर्वक शिव की पूजा कर जलधारा अर्पित करना चाहिए। मृत्युंजय मंत्र के 5 लाख जाप पूर्ण होने पर भगवान शिव के दर्शन प्राप्त होते है। लक्ष्मी अर्थात धन की कामना करने वाले मनुष्य को कमल के फूल ,बेलपत्र, शतपत्र और शंखपुष्प से भगवान शिव की अर्चना करनी चाहिए। अलग अलग फल की प्राप्ती के लिए अलग अलग फूल व पूजन विधि शिवपुराण में बताई गई है। उक्त बात शिव पुराण कथा के पांचवे दिन व्यास पीठ से आचार्य पं. प्रफुल्ल शुक्ला ने कहीं। निलकंठेश्वर महादेव मंदिर पर शिवपुराण कथा का वाचन चल रहा है। जिसका लाभ सैकडों भक्त प्रतिदिन ले रहे है। कथा 15 दिन तक चलेगी।

काशी के निवासी है शिव

पं. शुक्ला ने बताया कि सदाशिव को ही सब मनुष्य परम पुरूष ,ईश्वर,शिव शंभु और महेश्वर कहकर पुकारते है। उनके मस्तक पर गंगा, भाल में चंद्रमा और मुख पर तीन नेत्र शोभा पाते है। उनके पांच मुख है। तथा दस भुजाओं के स्वामी और त्रिशुलधारी है।भगवान शिव के स्वरूप का वर्णन करते हुए। उनके प्रमुख धाम काशी का वर्णन भी किया गया।

भगवान शिव निर्गुण निराकार है

कथा प्रसंग में बताया गया कि शिवजी रूद्ररूप में सबका संहार करते है।वे शिव स्वरूप सबके साक्षी है। वे माया से भिन्न और निर्गुण है। अपनी सारी शंकाओ और चिंताओं को त्यागकर भगवान शंकर का ध्यान करें। जो मनुष्य शरीर,मन और वाणी के द्वारा भगवान शिव की उपासना करता है उसे ज्ञानी कहा जाता है।जो मनुष्य शिवजी की भक्ति करते है वह संसार सागर से भवपार लग जाते है। जो लोग पाप रूपी दावानल से पीडित है उन्हे शिव नाम रूपी अमृत का पान करना चाहिए।

सरकारी स्कूलों की स्थिति दयनीय, कई स्कूल एक शिक्षक के भरोसे

ऑफिस वर्क के साथ शिक्षा बिगाड़ रही बच्चों की नींव

माही की गूंज, बरवेट।
जगदीश प्रजापति

केंद्र और राज्य सरकार मिल कर ग्रामीण क्षेत्रो में अच्छी शिक्षा पहुँचाने के नाम पर करोड़ो रूपये बर्बाद कर रहे हैं लेकिन जिन शिक्षकों को न केवल शिक्षा बल्कि अन्य कई क्षेत्रों में बच्चों को आगे लाना है उस सुविधाओं को देने वाले शिक्षक तक नही है ,आलम ये है कि क्षेत्र की कई स्कूलों में मात्र एक ही शिक्षक है जिसे न केवल एक से पांच कक्षा तक के बच्चों को पढ़ाना है साथ है विभाग की ओर से आने वाली सैकड़ो जानकारीयो सहित कई प्रकार के ऑफिस वर्क तक करना पड़ते हैं ऐसे में आने वाले देश भविष्य की नींव की स्थिति का सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है । बरवेट संकुल के अंतर्गत कई प्राथमिक विद्यालय ऐसे है जहाँ पर विगत वर्षों से मात्र एक शिक्षक के भरोसे स्कूल संचालित हो रहा है। यहां एक शिक्षक लिपिक के काम से लेकर, प्रधान पाठक, कक्षा शिक्षक खेल शिक्षक के रूप में काम कर रहा है। बच्चों का भविष्य भी एक ही शिक्षक के भरोसे टिका हुआ है। ऐसी स्थिति में इस स्कूल में कैसी पढ़ाई होती होगी यह स्वयं अंदाजा लगाया जा सकता है। बरवेट संकुल के अंतर्गत पांच प्राथमिक स्कूलो में एक एक शिक्षक पदस्थ है। जो बच्चों के एडमिशन, स्कूल का लेखा-जोखा लिखने के काम, पांच कक्षाओं को पढ़ाने का एक शिक्षक के भरोसे है। इन स्कूलो में अध्ययनरत छात्रों का भविष्य अंधकारमय दिख रहा हैं। ग्रामीणो ने बताया कि इन प्राथमिक विद्यालयों एक एक शिक्षक के भरोसे प्राथमिक विद्यालय संचालित हो रहै है यदि वे किसी कारणवश स्कूल नहीं जा पाते है तो पूरा स्कूल सूना हो जाता है। शिक्षक एक समय में एक ही कक्षा में जा सकता है और यदि ऑफिस का काम करना है तो पूरा स्कूल पढ़ाई से वंचित रहता है। एमआर मालवीय प्राचार्य संकुल केंद्र बरवेट का कहना है कि बरवेट संकुल के अंतर्गत आनेवाली पांच प्राथमिक विद्यालय है। जहाँ पर एक एक शिक्षक है। इन स्कूलों में अगर कोई शिक्षक जरूरी काम से छुट्टी पर जाता है तो उसकी जगह संस्था द्वारा किसी दूसरे शिक्षक को ड्यूटी पर भेजा जाता है। एक विद्यालय में दो शिक्षक होना चाहिए। इसके लिए अतिथि शिक्षकों को रखा जाएगा।

ये स्कूलों में एक शिक्षक के भरोसे

बरवेट संकुल के अंतर्गत प्राथमिक विद्यालय माता फलियां कचरोटिया, प्राथमिक विद्यालय कालीघाटी, प्राथमिक विद्यालय कुंडिया, प्राथमिक विद्यालय कास्याखाली, प्राथमिक विद्यालय कुडली में एक एक शिक्षक के भरोसे है स्कूल। बरवेट संकुल में कुल 38 विद्यालय है जिंसमे से 32 प्राथमिक विद्यालय है ।

कछुआ गति से कार्यः जल जीवन मीशन में ढाई साल बाद भी नहीं मिल पाया जल

कुए के साथ ही इस तरह से टंकी का निर्माण किया गया

जिम्मेदारों की लापरवाहीः जल जीवन जल मिशन में डेढ़ साल से कार्य बंद

माही की गूंज, खवासा। सुनील सोलंकी

27 मार्च को प्रकाशित समाचार

माही की गूंज खवासा, सुनील सोलंकी।

आजादी का अमृत काल महोत्सव सरकार मना रही है, तो वही जीरो टॉरलेंस की नीति अपना कर सरकार भ्रष्टाचार को खत्म करने का हवाला दे रही है। लेकिन क्या भ्रष्टाचार खत्म हुआ है...? यह सवाल आज भी ग्रामीणों के मन में है। लोगो को सुविधा मिले इसलिए सरकार द्वारा कई योजनाएं बनाई जाती है। लेकिन धरातल पर उक्त योजनाओं में किस तरह अनियमित्ता व आम जनता की गाड़ी कमाई को सरकारी अधिकारी किस तरह से भ्रष्टाचार कर रहे हैं। अधिकारी किस तरह से योजनाओं को पलीता लगा रहे हैं यह देखना हो तो जल जीवन जल मिशन के प्रोजेक्ट को भी देख सकते हैं। जहां पर कई जगह टंकीयों का निर्माण करने के बाद उनमें पानी तक सप्लाई नहीं हो पा रहा है। और झाबुआ जिले के अधिकारी भोपाल व दिल्ली तक हरा -हरा दिखा रहे हैं।

इसकी एक बानगी देखना हो तो ग्राम पंचायत नाहरपुरा खवासा की रुक्मणीपाड़ा फलिए में भी देख सकते हैं। माही की गूंज ने 27 मार्च 2025 के अंक में भी मय प्रामाणिकता के साथ खबर प्रकाशित की थी उसके बाद प्रशासन हरकत में आया और तत्काल पीएचई विभाग ने ठेकेदार को तलब करके वहां कुप का कार्य शुरू किया है। लेकिन इसके जानकार बताते है कि, जो कुप का कार्य अब शुरू किया जा रहा है उसमें भी सही से सीमेंट व सरिया आदि नहीं लिया जा रहा है, कार्य में अभी भी वहां अनियमिता से कुप का निर्माण हो रहा है।

ग्रामीणों ने बताया कि, नाहरपुरा ग्राम पंचायत के रुक्मणीपाड़ा फलिया में जहां 50 से 55 घर के लोग निवास करते हैं, यहां रोड के नजदीक से ही टंकी का निर्माण ठेकेदार ने कर दिया लेकिन लोगों के घरों तक पाइपलाइन व नल कनेक्शन दिए ही। जिसके कारण वहां के ग्रामीणों को जल जीवन जल मिशन में योजनाओं का लाभ नहीं मिल पा रहा है। सिर्फ टंकी का निर्माण कछुआ गति से किया लेकिन वहां भी पाइप वगैरा नहीं बिछाए गए। प्राप्त मिली जानकारी के अनुसार सुरत की कम्पनी एवीसी ग्रुप को ठेका मिला था लेकिन टंकी निर्माण किया गया उसके बाद कार्य बंद कर दिया। ग्रामीणों की माने तो दो साल से कार्य बंद है, कार्य कछुवा गति से चला जिस से आज भी ग्रामीणों के घरो तक पानी नहीं पंहुचा है। वही माही की गूंज मे समाचार प्रकाशित होने के बाद स्थानीय अधिकारियों ने तत्काल ठेकेदार को तलब करते हुए कुप का कार्य यहा शुरू करवाया। लेकिन अभी भी वहां नल कनेक्शन के साथ पाइपलाइन नहीं बिछाई गई है। ना ही नल स्टैंड लगाए गए हैं। जो कार्य वर्तमान में चल रहा है। वह भी कछुआ गति से ही चल रहा है। जिससे साफ प्रतीत होता है कि अगली गर्मी तक भी ग्रामीणों को पानी नसीब नही हो पाएगा।

स्थानीय ग्रामीणों का आरोप है कि, दो साल से टंकी का कार्य बंद है, ना ही कभी भी विभागीय अधिकारियों ने आकर मौका मुआना करा ना ही ग्राम पंचायत के जिम्मेदार ने अधिकारियों ने वरिष्ठ अधिकारियो को अवगत कराना उचित समझा, नतिजा यह की टंकी तो बन गई लेकिन पाइपलाइन घरों तक आज दिन तक नहीं बिछाई गई। जबकि केंद्र सरकार का यह महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट है। अधिकारी व ठेकेदार मिलकर शासन की योजनाओं को पलीता लगा रहे हैं। इसकी जांच होनी चाहिए और टंकी के निर्माण के साथ पाइपलाइन इतनी लेट क्यों हुई इस पर भी विभागीय अधिकारियों के ऊपर कार्रवाई होनी चाहिए यह ग्रामीणों का कहना है।

उल्टी दस्त से एक और व्यक्ति की मौत

माही की गूंज, भामल।

21 जून रात्रि से ग्राम पंचायत भामल में जब उल्टी दस्त की शिकायत से कई परिवार बीमार हुए तो प्रशासन हरकत में आया और तत्काल राहत कैंप लगाया। लेकिन कई मरीज रिकवर हुए तो कोई गंभीर समस्या से झूझता हुआ नजर आया। जिसके बाद कई मरीजों को पेटलावद सिविल अस्पताल व झाबुआ अस्पताल के साथ कई मरीजों को दाहोद अस्पताल में में उपचार हुआ। कई मरीज ठीक होकर वापस अपने घर आए तो कई मरीज सीरियस होने के दाहोद के निजी अस्पताल में आईसीयू में भर्ती भी रहे। 21 जून को जब उल्टी दस्त से नहारसिँह खेर की मौत हो गई थी तो प्रशासन ने तत्काल ग्राम पंचायत भामल में साफ सफाई के साथ ही कुएं के पानी का आदि सैंपल लिया था। लेकिन बीमारी किस वजह से हुई उसका पता आज दिन तक प्रशासन नहीं खोज पाया। फिर भी गांव में एक दो मरीज आज भी उल्टी दस्त से पीड़ित है। माही की गूंज को मिली जानकारी के अनुसार उल्टी दस्त से एक और व्यक्ति की मौत हो गई है।

नानालाल जादव, दशरथ जादव, धीरज जादव ने जानकारी देते हुए बताया, हमारा भाई मनोहर पिता नंदलाल जादव जो कि, शुक्रवार से लेकर शनिवार तक उल्टी दस्त से पीड़ित था उसको सरकारी एंबुलेंस से पेटलावद अस्पताल पहुंचाया जहां सीरियस होने से झाबुआ अस्पताल ले गए लेकिन वहां के डॉक्टरों ने दाहोद ले जाने की सलाह दी उसके बाद तत्काल दाहोद अस्पताल में ले गए जहां तीन दिन तक आईसीयू में भर्ती रखा उल्टी दस्त अधिक होने के साथ उसको डायरिया की शिकायत हो गई थी। जिसकी वजह से वह होश में ही नहीं आया तीन दिन आईसीयू में रखने के बाद वहां के डॉक्टरों ने अहमदाबाद ले जाने की सलाह दी। तो हम बुधवार को अहमदाबाद निजी वाहन से ले ही जा रहे थे। कि रास्ते में ही मनोहर की मौत हो गई। बताया कि, पानी से ही उल्टी दस्त से ही मौत हो गई है प्रशासन को जांच करना चाहिए।

रोजगार सहायक को कारण बताओं नोटिस

माही की गूंज, करवड़।

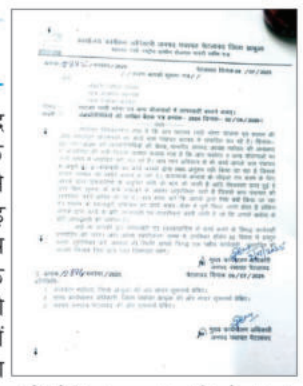

पेटलावद विकासखंड के अंतर्गत आने वाली करवड़ पंचायत में पदस्थ रोजगार सहायक संगीता सिनम को कारण बताओं नोटिस जारी हुआ है। यह कारण बताओं नोटिस महात्मा गांधी नरेगा एवं अन्य योजना में रोजगार सहायक संगीता सिनम के द्वारा शासन की अन्य महत्वपूर्ण योजनाओं मैं लापरवाही बरतने पर मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत पेटलावद के द्वारा कारण बताओं नोटिस जारी किया गया। नोटिस में आपके द्वारा मनरेगा एवं अन्य योजना का कार्य समय में संपादित नहीं कर रहे हैं जल गंगा अभियान लापरवाही, ई केवाईसी का कार्य लापरवाही, प्रधानमंत्री आवास के जिओ टेक करने के लिए हितग्राहियों से अनुचित राशि की मांग, पंचायत भवन में अक्सर अनुपस्थित रहना जैसी शिकायत मुख्य कार्यपालन अधिकारी को प्राप्त हुई। ग्राम पंचायत सरपंच विकास बाबूलाल गामड़ का कहना है कि अभी स्कूलों के समय बच्चों को ई केवाईसी के लिए रोज पंचायत में भटकना पड़ रहा है पंचायत में रोजगार सहायक अनुपस्थित रहते हैं। जिसके कारण बच्चों के माता-पिता को ई केवाईसी के लिए बाजार में 50 से लेकर 100 रुपये तक दुकानदारों को देने पड़ रहे हैं।

ज्ञापन : आदिवासी दिवस पर सरकारी छुट्टी घोषित करने और अंग्रेजी शराब प्रतिबंधित हो सहित 36 मांग

माही की गूंज, पेटलावद।

सामाजिक संगठन भीलप्रदेश मुक्ति मोर्चा के बैनर तले अलग भीलप्रदेश राज्य गठन की माँग को लेकर विगत चार वर्षों से 15 जुलाई के दिन राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन दिया जाता है ,इसी तारतम्य में इस वर्ष का ज्ञापन दिनांक 15 जुलाई मंगलवार को अनुविभागीय अधिकारी पेटलावद को दिया गया द्य ज्ञापन इस निश्चित दिनांक को प्रतिवर्ष पश्चिमी भारत स्थित चार राज्यों मध्यप्रदेश, राजस्थान , गुजरात ओर महाराष्ट्र के सम्पूर्ण आदिवासी विस्तार में दिया जाता है । अलग भीलप्रदेश राज्य गठन की माँग को लेकर दिऐ इस ज्ञापन में आदिवासी समुदाय के ज्वलंत मुद्दे एवम् संविधान के अनुच्छेद 3(के,आ,ग,घ, ड.) के तहत चार राज्यों का सीमाई ईलाका एवं एक केन्द्र शासित प्रदेश को

मिलाकर अलग भीलप्रदेश राज्य गठन किये जाने का विषय दिया था द्य ऐतिहासिकता से भरपुर इस ज्ञापन में लिखा था कि भारतीय उपमहाद्वीप में 20 लाख वर्ष पहले से रह रहे आखेटक- खाद्य संग्राहक मानव समूह के वंशज आदिवासी है। पुरातात्विक स्थल विन्ध्यांचल सातपुड़ा अरावली पर्वतमालाओं कि बेलन घाटी , साबरमती नदी बेसिन ओर भीम बेटका में मिले हैं , भारत की इस मूल संस्कृति मानव समूह के संरक्षण के लिये भीलप्रदेश राज्य का गठन आवश्यक है । इतिहास काल में अप्रवासी यहूदी ,यूनानी ,ईरानी , मुस्लिम , ईसाई धर्मी लोगों की बसावट हुई । इस कारण से भारत कि मूल संस्कृति , सभ्यता , बोली ,धर्म के अस्तित्व की सुरक्षार्थ भील सांस्कृतिक ऐतिहासिक भाषाही क्षैत्र को मिलाकर , भील आदिवासी समुदाय के मान - सम्मान- स्वाभिमान के लिये अलग भीलप्रदेश आजारी के उपरांत ही बनाया जाना चाहिए था । इस ज्ञापन में कुल 36 बिंदु लिखे गये थेद्य जिनमें लिखा था कि 9अगस्त विश्व आदिवासी दिवस पर प्रतिवर्ष के लिये शासकीय अवकाश घोषित किया जाए। एक राष्ट्र - एक शिक्षा का कानून बनाया जाऐ। इस आदिवासी विस्तार में आदिवासी क्षेत्रो में अंग्रेजी शराब विक्रय पर प्रतिबंध लागु किया जाए। सभी उपखंडों पर आदिवासी महापुरूषों की प्रतिमाऐं स्थापित कर आदिवासी प्रैरणा स्थल विकसित करने 36 मांगों को पूरी करने की मांग की है ।

मंत्र दीक्षा का आयोजन सम्पन्न

माही की गूंज , पेटलावद।

परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वीश्री पंकज श्रीजी आदि ठाणा 3 के पावन सानिध्य में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में स्थानीय तेयुप द्वारा मंत्र दीक्षा कार्यशाला का आयोजन स्थानीय तेरापंथ भवन में किया गया। आयोजन में साध्वी पंकजश्री जी ने अपने मंगल उदबोधन में मंत्र दीक्षा को एक महत्वपूर्ण उपक्रम बताते हुए कहा कि गुरुदेव आचार्य श्री तुलसी ने जो संकल्प लिया था व जो सपना देखा था आज वह पूरा होते हुए दिख रहा है। इस गरिमामय अवसर पर साध्वी श्री शारदा प्रभा जी ने नमस्कार महामंत्र की महिमा बताते हुए कहा कि नमस्कार महामंत्र की मंत्र दीक्षा न सिर्फ बच्चों को बल्कि बड़ो को भी लेनी चाहिए। कार्यक्रम का कुशल संचालन करते हुए साध्वी श्री शालीनप्रभा जी ने ज्ञानशाला की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि बच्चों के भीतर धार्मिक संस्कार जगाने के लिए ज्ञानशाला का एक अहम योगदान है। कार्यक्रम में सभा अध्यक्ष नरेंद्र पालरेचा ने सभी अभिभावकों से अपने छोटे छोटे नन्हे बच्चों को ज्ञानशाला भेजने हेतु सभी से निवेदन किया।

भारतीय क्रिकेट खिलाड़ी और आरसीबी के कप्तान श्री पाटीदार ने हरिहर आश्रम में किया रुद्राभिषेक

माही की गूंज, पेटलावद।

मध्यप्रदेश के पेटलावद क्षेत्र के पास के ग्राम करवड़ अपने ससुराल आए भारतीय क्रिकेट के खिलाड़ी और आईपीएल की इस वर्ष की विजेता टीम के कप्तान रजत पाटीदार सोमवार को सःपत्नी गुंजन पाटीदार के साथ हरिहर आश्रम बनी पहुँच कर आचार्य डॉ. देवेंद्र शास्त्री का आशीर्वाद लिया। हरिहर आश्रम पर श्री कृष्ण कामधेनु गौशाला बनी हुई हैं जहां रजत पाटीदार ने रुद्राभिषेक व महायज्ञ में आहुतियां समर्पित कर गौसेवा का लाभ लिया। रजत पाटीदार के आने की जानकारी बहुत कम लोगो को दी गई जिससे कि उनके प्रशसकों को उनसे मिलने का मौका नही मिला। यहां तक कि उनके आने की जानकारी भी उनके जाने के बाद बहार आई।

रजत पाटीदार आईपीएल में रॉयल चेलेंज बेंगलुरु के कप्तान 2025 के सत्र में पहली बार बने और 18 साल में पहला खिताब आरसीबी को दिलवाया। रजत भारतीय टीम के लिए टेस्ट मैच भी खेल चुके है।

सिद्धेश्वर मंडल द्वारा अयोध्या में भव्य सुंदरकांड पाठ

माही की गूंज, काकनवानी।

श्री श्री 108 श्री राम बाबा द्वारा संकल्पित 108 भागवत कथा में से 107वीं कथा का आयोजन उत्तम स्वामी जी के मुखारविंद से सरयू नदी के तट पर श्री साकेत अयोध्या धाम में 16 जुलाई से 24 जुलाई तक किया जाना है।

इस भव्य राम कथा के आयोजन के दौरान काकनवानी श्री सिद्धेश्वर मंडल द्वारा 23 जुलाई को राम कथा के पंडाल में भव्य सुंदरकांड पाठ का आयोजन किया जाना है। जिसमें काकनवानी से सैकड़ो राम भक्त इस कथा के रसपान के लिए जाएंगे।

आपको बता दे कि, श्री राम बाबा का बचपन काकनवानी में बीता यहां से करीब 30-35 वर्ष पूर्व कटनेरा निसरपुर में अपना मठ जमाया। जहां से श्रीराम बाबा काकनवानी शिव मंदिर का भी संचालन करते हैं। प्रतिमाह उनका यहां आना-जाना होता रहता है और यहां कई बड़े-बड़े भव्य आयोजन हो चुके हैं।

जिसमें से वर्ष 2007 में संकल्पित 108 भागवत कथा में से पहली भागवत कथा का आयोजन काकनवानी में किया गया था। इसके पश्चात अन्य सभी कथाएं सभी दूर पूरे क्षेत्र में एवं दूर-दूर तक करवाई गई इन सभी कथाओं के पश्चात लास्ट 108वीं भागवत कथा का आयोजन वृंदावन में किया जाना है।

निजी स्कूल यानि लूट खसोट का धंधा

माही की गूंज, काकनवानी।< नरेश पंचाल

शासकीय स्कूल की तुलना में निजी संस्थानों में बच्चों की भरमार एडमिशन हो रहे हैं। जबकि शासकीय स्कूलों में बिना पैसे, बिना फीस के एवं फ्री में पुस्तक मिल रही है, फ्री में खाना मिल रहा है। उसके बावजूद भी शासकीय स्कूलों में कम एवं निजी संस्थानों में ज्यादा बच्चे पढ़ रहे हैं। यह कहीं ना कहीं शासन-प्रशासन की कमजोरी के कारण ही या अनदेखी के कारण ही ऐसा हो रहा है।

शिक्षा क्षेत्र में देखा जाए तो अधिकारी वर्ग पूरी तरह आंखें बंद करके बैठे हैं या फिर गांधी छाप के कारण आंखों पर पट्टी बंधी पड़ी है और ऊंची ऊंची बिल्डिंगों वाली संस्थाओं से मोटी कमाई कर रहे हैं। आज शिक्षा को सिर्फ और सिर्फ कमाई का जरिया बना लिया है और इस दुकानदारी में मन माफिक फीस एवं भारी भरकम पुस्तक-कॉपियां और जब इच्छा हुई स्कूल ड्रेस बदल दी जाती है।

शुरुआती दौर में यानी 10 से 15 वर्ष पूर्व जो निजी संस्था शुरू हुई थी उस संस्था में करीब 700 से 800 बच्चे अध्यनरत थे जो आज घटते हुए क्रम में आकर मात्र डेढ़ सौ बच्चों में सिमट गई। वहीं बड़ी-बड़ी ऊंची बिल्डिंग में जीरो ग्राउंड से उठी संस्था आज हजारों बच्चे पढ़ाई कर रहे हैं यह बड़ी संस्था वाले संचालक छोटी संस्थाओं से निकले हुए बच्चों को तुरंत एडमिशन दे देते हैं और बच्चों की संख्या ज्यादा से ज्यादा बढ़ाने में लगे हुए हैं।

बिना डॉक्यूमेंट के ऐडमिशन

काकनवानी निजी संस्थानों में देखने में आया है कि एक निजी स्कूल संचालित स्कूल मे करीब 800 बच्चे अध्यनरत थे जो आज धीरे-धीरे डेढ़ सौ बच्चों की एवं स्कूल बंद होने की कगार पर आ चुका है। इस स्कूल संचालक के पास विद्यालय का जो भवन किराए पर ले रखा है उसका किराया भी नहीं निकल रहा है इसका मुख्य कारण यह है कि विगत तीन से चार वर्षों में कई बच्चे इस संस्था से बाहर निकाल दिए गए। क्योंकि उनके पालको के द्वारा बच्चों की फीस जमा नहीं की गई एवं अभी भी कई बच्चे अध्यनरत है उनकी भी फीस नहीं आ रही है। जिन बच्चों की फीस नहीं आ रही उन बच्चों को संचालक द्वारा धीरे-धीरे स्कूल से बाहर निकाल दिया जा रहा है। उन्ही बच्चों को दूसरी स्कूलों के संचालक को द्वारा उन बच्चों को बिना किसी डॉक्यूमेंट बिना टीसी के एडमिशन दे रहे हैं। ऐसी स्थिति में उक्त स्कूल से फीस को लेकर पत्र व्यवहार भी किया गया एवं शासकीय अधिकारियों को भी इस बारे में पत्र व्यवहार से अवगत करवाया गया लेकिन किसी भी प्रकार की कोई कार्यवाही नहीं हो रही। आज स्थिति यह हो गई है कि, 800 बच्चे से संचालित स्कूल जिसमें कई सुविधाओं खेलकूद के अलावा पढ़ाई में अव्वल एवं 95 से 98 प्रतिशत लाने वाले बच्चे जिनको पढ़ाने वाले ग्रेजुएट शिक्षक और संचालक आज जीरो ग्राउंड पर आते हुए दिख रहे हैं। यही कहेंगे कि आज छोटे स्कूल संचालक आत्महत्या करने की कंगार पर आ चुका है।

संपादकीय

निरंकुश नहीं आजादी

कथित सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर एंटी सोशल अभिव्यक्ति के चलते उपजी विभाजनकारी प्रवृत्तियों पर अंकुश की जरूरत बताते हुए देश की शीर्ष अदालत ने आत्म-नियमन की जरूरत बतायी है। दरअसल, जस्टिस बीवी नागरत्ना और जस्टिस के.वी. विश्वनाथन की पीठ, एक व्यक्ति द्वारा दायर याचिका पर विचार कर रही थी, जिस पर धर्म विशेष के देवी-देवताओं के खिलाफ आपत्तिजनक पोस्ट के चलते कई राज्यों में प्राथमिकी दर्ज की गई थी। अदालत का कहना था कि नागरिकों को अभिव्यक्ति की आजादी के अधिकार का मूल्य समझना चाहिए। साथ ही इस अधिकार का इस्तेमाल करते हुए आत्म-संयम बरतना चाहिए। कोर्ट ने चेताया है कि यदि सोशल मीडिया पर विभाजनकारी प्रवृत्तियों पर अंकुश नहीं लगता तो सरकार को हस्तक्षेप करने का मौका मिलता है। जो एक अच्छी स्थिति नहीं होगी। निस्संदेह, समाज में विद्वेष व नफरत फैलाने वाले संदेश समरसता के भारतीय परिवेश के लिये गंभीर चुनौती बने हुए हैं। यही वजह है कि कोर्ट को कहना पड़ा कि वह नियमन के लिये दिशा-निर्देश जारी करने पर विचार कर रही है। दरअसल, अदालत का मानना था कि संविधान के अनुच्छेद 19(2) के तहत मिली आजादी असीमित कदापि नहीं है। यदि उससे सामाजिक समरसता में खलल पड़ता है तो सरकार को दखल देने का मौका मिलता है। जो कि एक लोकतांत्रिक देश के लिये अच्छा संकेत नहीं है। कोई नहीं चाहता कि उसकी अभिव्यक्ति की आजादी को सरकार नियंत्रित करे। सही मायनों में लोगों को समझना चाहिए कि देश की एकता व अखंडता बनाये रखना मौलिक कर्तव्य ही है। अदालत ने इस बाबत सवाल भी किया कि नागरिक स्वयं को संयमित क्यों नहीं कर सकते? कोर्ट का मानना था कि लोग तभी अभिव्यक्ति की आजादी का आनन्द ले सकते हैं जब यह संयमित ढंग से व्यक्त की जाए। शीर्ष अदालत की पीठ का मानना था कि नागरिकों के बीच भाईचारा होना चाहिए, तभी समाज में नफरत से मुकाबला किया जा सकता है। तभी हम गंगा-जमुनी संस्कृति के समाज का निर्माण कर सकते हैं।

वैसे कई राज्यों में स्वतंत्र अभिव्यक्ति के नियमन को लेकर सरकारी कार्रवाई को लेकर भी सवाल उठते रहे हैं। कई जगह विचारों की अभिव्यक्ति व कार्टून आदि बनाने को राजनीतिक दुराग्रह बताते हुए लोगों को गिरफ्तार तक किया गया है। जिसे सत्ताधीशों द्वारा बदले की भावना से की कार्रवाई बताया जाता रहा है। आरोप लगाया जाता रहा है कि सत्तारूढ़ दल की विचारधारा के अनुरूप अमर्यादित अभिव्यक्ति पर कोई एक्शन नहीं लिया जाता। लेकिन दूसरे राज्य में अन्य राजनीतिक दल की सरकार में यही अभिव्यक्ति अपराध बन जाती है। कहा जाता रहा है कि अभिव्यक्ति की आजादी द्वारा किसी मर्यादा को भंग करना घटिया या आपत्तिजनक तो हो सकता है लेकिन इसे अपराध की श्रेणी में नहीं रखा जाना चाहिए। इसे कानून के आलोक में देखा जाना चाहिए। यह निर्विवाद सत्य है कि विभिन्न राजनीतिक दलों व संगठनों द्वारा सोशल मीडिया मंच का जमकर दुरुपयोग किया जाता रहा है। वहीं लोगों का कसूर यह है कि दल विशेष के एजेंडे वाली सामग्री को वे बिना पढ़े, दूसरे लोगों व समूहों में शेयर कर देते हैं। दरअसल,आम नागरिकों को प्रशिक्षित किया जाना चाहिए कि सोशल मीडिया पर उनका संयमित व्यवहार कैसा होना चाहिए। बहुत से लोगों को यह पता नहीं होता है कि सोशल मीडिया पर शेयर की जा रही सामग्री की कितनी संवेदनशीलता है। कई लोग जाने-अनजाने में ऐसी सामग्री दूसरे व्यक्तियों व समूहों में शेयर कर देते हैं जो समाज विरोधी हो सकती है। दरअसल, वे उसकी मूल सामग्री को बनाने वाले के छिपे एजेंडे को नहीं भांप पाते। कभी-कभी भावावेश में लोग ऐसे कदम उठा देते हैं। निरसंदेह, कोई भी व्यक्ति भावनात्मक दुर्बलताओं से मुक्त नहीं होता, लेकिन फिर भी उसे शेयर की जा रही सामग्री की तार्किकता पर मंथन जरूर करना चाहिए। दरअसल, सोशल मीडिया आज एक ऐसा अस्त्र बन गया है जो जरा सी चूक से घातक साबित हो सकता है। वास्तव में हर नागरिक को इतना सचेत व जागरूक होना जरूरी है कि वह विभिन्न स्रोतों से आने वाली सामग्री से जुड़ी मंशा को समझ सके। निःसंदेह, संयमित, तार्किक व सतर्क प्रतिक्रिया से हम अभिव्यक्ति के मौलिक अधिकार का आनन्द ले सकते हैं।

हम भी तो दोषी हैं राधिका की मौत के

राधिका यादव, सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर बनना चाहती थी। उसने एक म्यूजिक वीडियो भी बनाया था। उसमें इनामुल हक नाम के लड़के ने काम भी किया था। इनामुल हक ने कहा कि मेरी न उससे कोई दोस्ती थी, न ही वीडियो बनाने के दौरान हमारी कोई बातचीत हुई। सवाल यह है कि इन दिनों सोशल मीडिया के जरिए जब तमाम युवा ग्लोबल हो गए हैं। तब कौन किससे बात कर रहा है, इसे कैसे रोका जा सकता है। वह कोई भी हो सकता है-हिंदू, मुसलमान, ईसाई। कैसा समाज बना रहे हैं हम। कहा जा रहा है कि पिता वीडियो बनाने से नाराज था। उसने राधिका से वीडियो डिलीट करने के लिए कहा था, लेकिन उसने मना कर दिया। एक लड़की अगर कुछ करना चाहती है, तो उसकी राह में इतने रोड़े क्यों हैं। खबरों में आ रहा है कि पिता पंद्रह दिनों से सोया नहीं था।

जिस दिन राधिका की मां का जन्मदिन था, वह घर की साज-सज्जा कर रही थी। रसोई में खाना पका रही थी, उसी वक्त उसे तीन गोलियां मार दी गईं। एक पिता जिसने अपनी बेटी को टेनिस खेलना सिखाया था, उसे महंगे से महंगे रैकेट लाकर दिए थे, जब उसके कंधे में चोट लग गई, तो राधिका ने टैनिस एकेडमी खोल ली। वह खूब चलने लगी। पता चला कि इससे पिता जब बाहर निकलता, तो आसपास के लोग कहते कि तुम्हारी बेटी तो तुमसे ज्यादा पैसे कमाती है। तुम उसकी कमाई खाते हो।

यह घटना गुड़गांव के उस पॉश इलाके में हुई, जिसे उत्तर भारत का साइबर सिटी कहा जाता है। चमचमाती इमारतों और बड़े बहुराष्ट्रीय निगमों के दफ्तरों से ये शहर भरा पड़ा है। लेकिन इन सबसे क्या होता है, जब मन में कुछ और चल रहा हो। बेटी की कमाई पिता के लिए इतनी अपमानजनक बने कि उसकी हत्या करनी पड़े। बजाय इसके कि उसकी कमाई और कुछ करने के जज्बे की तारीफ की जाती, गर्व किया जाता, उसे मौत दे दी गई। क्यों भला। जो लड़की राष्ट्रीय स्तर की खिलाड़ी हो, उसे इतनी भी आजादी नहीं कि वह कोई वीडियो बना सके। एकेडमी खोल सके। आखिर जो बातें उसकी तारीफ का कारण बनतीं, वे जान लेने का कारण कैसे बन गईं।

प्रॉपर्टी डीलर का व्यवसाय करने वाले पिता का कहना है कि वह पड़ोसियों के तानों से तंग आ चुका था। उसने राधिका से कहा था कि घर में पैसे की कोई कमी नहीं है, वह एकेडमी बंद कर दे, मगर वह नहीं मानी।

आखिर वह क्यों मानती। इन दिनों कोई भी एकेडमी चलाना आसान बात नहीं है। मात्र तीन महीने की अवधि में ही यदि यह एकेडमी चल निकली और अच्छी आय होने लगी, तो इसमें उस लड़की के कितने प्रयत्न और मेहनत लगी होगी। अफसोस कि जिस पिता ने उसे सपने दिखाना सिखाया था, उन्हें पूरा करने में मदद की थी, उसी ने अपनी बेटी की जान ले ली। उन ताने मारने वालों का तो कुछ नहीं गया। कायदे से तो पुलिस को उन्हें पकड़ना चाहिए। पिता के साथ-साथ राधिका की हत्या में ऐसे लोगों की भी समान भागीदारी है, जिनसे एक पचीस साल की लड़की की सफलता नहीं देखी गई। ईर्ष्या के भाव ने, दूसरों की लड़की पर बिना कारण उंगली उठाए जाने वाली सोच ने एक पूरे परिवार को बर्बाद कर दिया। राधिका की मां पर क्या गुजर रही होगी, जिसने ऐन अपने जन्मदिन पर बेटी को खो दिया। और उसकी जान लेने वाला कोई और नहीं उसका पिता निकला।

इस लेखिका की मां जो आज एक सौ सात वर्ष की होती, उसकी एक बात हमेशा याद रही। वह कहती थी कि तुम कुछ भी करो, दुनिया उसमें खोट निकालेगी। इसलिए दुनिया की परवाह न करके वह करो, जो तुम्हें ठीक लगता है। दरअसल, लड़कियों को यह महामंत्र सीखना चाहिए। यदि स्त्रियों ने दुनिया की परवाह की होती, तो आज वे हर क्षेत्र में सफलता के नए कीर्तिमान स्थापित न कर रही होतीं। रघुवीर सहाय के शब्दों में-पढ़िए गीता, बनिए सीता, फिर इस सब में लगा पलीता निज घरदूबार बसाइए। महान लेखिका महादेवी वर्मा ने भी ऐसा ही बहुत कुछ लिखा है, लेकिन निज घर, बार में भी चैन कहां। कभी ससुराल में मौत, तो कभी अपने ही माता-पिता द्वारा दी गई मौत। हरियाणा के सोनीपत से ही बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ का नारा दिया गया था। इससे बहुत कुछ बदला, लेकिन राधिका की हत्या ने जैसे हिलाकर रख दिया। राधिका का जीवन गया, पिता जेल में सड़ेगा, ऐसे में बाकी परिवार का क्या होगा, मां क्या करेगी, कौन जाने।

लड़कियों को जिन कठिनाइयों का सामना विवाह के बाद करना पड़ता है, वे तो हैं ही। लेकिन अपने परिवार में भी तो उन्हें कोई कम कठिनाइयां नहीं झेलनी पड़तीं। धर्म और विज्ञान का कैसा घालमेल है कि जिस अमीनोसेंटेसिस टैस्ट और अल्ट्रासाउंड को मनुष्य के अंदरूनी रोगों को देखने के लिए बनाया गया था, उसकी मदद लेकर लड़कियों को मारा जाने लगा। अमीनोसेंटेसिस तो फिर भी महंगा टैस्ट था, अल्ट्रासाउंड ने तो इसे और आसान बना दिया। पश्चिमी देशों में इसीलिए भारतीय माता-पिताओं पर शक किया जाता है। उन्हें यह नहीं बताया जाता कि गर्भ में लड़का है या लड़की। क्योंकि वहां डाक्टर मानते हैं कि भारतीय माता-पिता लड़की होने वाली है, यह पता चलते ही, उससे निजात पाने की कोशिश करते हैं। कई दम्पतियों का कहना है कि यह सुनकर उन्हें बहुत शर्मिंदगी महसूस होती है। क्योंकि अन्य देशों के लोगों को बच्चों का लिंग बता दिया जाता है। फिर लड़की पैदा होते ही मातम मनाना, उसकी शिक्षा में भी भेदभाव, इलाज में भी, जन्मते ही यह उपदेश कि उसे तो पराये घर जाना है, आदि बातें लड़कियों का कैसा मानस बनाती हैं कि वे हर तरह के शोषण को अपना भाग्य मान लेती हैं।

क्षमा शर्मा

लड़की कुछ न करे तो समस्या, कुछ करे, ज्यादा पैसा कमाए, तो आफत। जाए तो जाए कहां। इसलिए राधिका की हत्या में उसका पिता तो जिम्मेदार है ही, समाज भी जिम्मेदार है, जो लड़के और लड़कियों को अलग-अलग नजरिये से देखता है। लड़कियों की सफलता का मतलब, हाथ में पैसा आने का अर्थ, घर के पुरुषों की बेइज्जती तो है ही, अड़ोस-पड़ोस वालों की ईर्ष्या-द्वेष से भरी उठती उंगलियां भी दोषी हैं।

अब तो यह भी पूछने का मन नहीं करता कि ऐसा क्यों करते हो। और लड़कियों को तो बिना कुछ किए की सजा मिल जाती है, तुम फिर किसी अगली लड़की पर थानेदारी दिखाने निकल पड़ते हो। कब तक लड़कियां अपनों के ही हाथों द्वारा मारी जाती रहेंगी। इस बात पर इतराने से क्या होता है कि हमने तो अपने देश में 1966 में ही एक महिला को प्रधानमंत्री बना दिया था, अमेरिका तो आज तक ये नहीं कर पाया कि देश का सर्वोच्च पद किसी महिला को सौंप सके। लेकिन अमेरिका में किसी लड़की को न कोई ताने देता है, न तानों के कारण कोई पिता उसकी हत्या करता है।

लोकतंत्र के प्रहरी की भूमिका निभाने का वक्त

मनोज झा

प्रिय मुख्य चुनाव आयुक्त! मैं समय के गलियारे के छोर से आपको यह चिट्ठी लिख रहा हूं। एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जिसे हमारे गणतंत्र के एकदम प्रारंभिक वर्षों में यह सुनिश्चित करने का पावन काम सौंपा गया था कि प्रत्येक भारतीय, चाहे वह किसी भी जाति, पंथ, वर्ग या क्षेत्र का हो, मुक्त और बेखौफ होकर अपना वोट डाल सके। यह संवैधानिक कर्तव्य और ऐतिहासिक चिंतन की वह गहरी भावना है, जिसके आधार पर मैं आपको बताना चाहूंगा कि कैसे हमने लोकतांत्रिक स्व-शासन के एक महान प्रयोग की नींव रखी। एक ऐसा गणतंत्र, जहां प्रत्येक वयस्क, चाहे उसकी सामाजिक या आर्थिक हैसियत कुछ भी हो, समान मताधिकार रखता है।

जब मैंने 1951-52 में पहला लोकसभा चुनाव करवाया था, तब गणतंत्र शैशव काल में था, विभाजन के जख्म ताजा थे, निरक्षरता से बोझिल और सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार के विचार से अनभिज्ञ। फिर भी, भारतीय जनता ने चुनावी प्रक्रिया में अटूट विश्वास जताया, क्योंकि उन्हें यकीन था कि इसे संचालित करने वाली संस्था निष्पक्षता, दृढ़ता और कार्यपालिका से पूर्ण आजादी के साथ काम कर रही है।

आज, जरूरी है कि यह विश्वास डगमगाए नहीं, क्योंकि बिहार में जारी मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण के बारे में आई हालिया रिपोर्टें बेहद परेशान करने वाली हैं। आरोप हैं कि यह प्रक्रिया गरीबों, भूमिहीनों और सामाजिक रूप से हाशिए के लोगों को असमान रूप से प्रभावित कर रही है, जिनके लिए मतदान का अधिकार अक्सर सशक्तीकरण का एकमात्र वास्तविक साधन रहा है।

वहां चल रहा पुनरीक्षण कार्य लोगों का नाम काटने और शक्तिहीन करने वाला प्रतीत हो रहा है। दूरगामी परिणामों वाले इतने विशाल काम को, इतने कम समय में करने का प्रयास तक आपदा का नुस्खा बन सकता है। आप यह काम एक ऐसे राज्य में कर रहे हैं जहां से दूसरे राज्यों में प्रवासी कामगार बनने वालों की संख्या बहुत अधिक है। जिसका भूगोल कुछ महीने बाढ़ से अस्त-व्यस्त रहता है। आप पर सूचना प्रकटीकरण में कंजूसी, चर्चाओं और संवाद में अड़ियल रवैया अपनाने और सबसे दुखद यह कि सार्वजनिक संवाद में आपके द्वारा लड़ाकू रुख रखने के आरोप लगते हैं। इन दिनों आलोचकों को चुप कराने के लिए नियम-पुस्तिका का वास्ता देना एक प्रकार से नैतिकतावादी हथकंडा बन गया है। नियम-पुस्तिका न्यूनतम और बुनियादी मानकों को सुनिश्चित करने के लिए होती है।

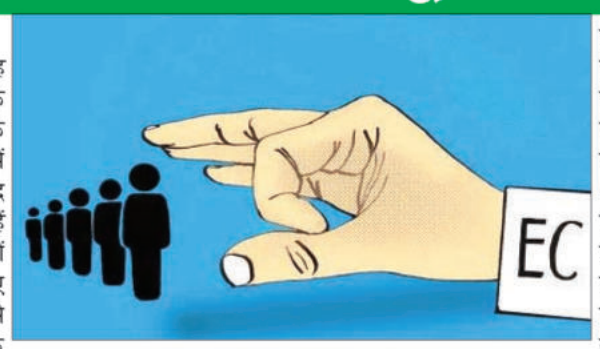

करोड़ों लोगों पर उनका नाम कटने की चिंता तारी है। इस प्रक्रिया के शुरू होने के दो हफ्ते बाद भी, कई लोगों को मतदाता आवेदन फ़ॉर्म तक नहीं मिले हैं। अपनी पात्रता सिद्ध करने को मतदाताओं के एक बड़े हिस्से के पास आपके आयोग द्वारा तय किए गए 11 दस्तावेज़ों में एक भी नहीं है। आमतौर पर जारी किए जाने वाले पहचानपत्र, जिनमें वोटर कार्ड भी शामिल है, को सत्यापन हेतु बेवजह अवांछित बना दिया है। इस मामले में जारी अस्पष्ट निर्देश आम लोगों के रोज़मर्रा के जीवन में और अधिक ऊहापोह मचा रहे हैं, जो उन्हें नौकरशाही के अंधे फैसलों के दौर से गुज़रने के लिए मजबूर कर रहा है। जिस देश में सरकार ने नागरिकता संबंधी कोई दस्तावेज़ ही जारी नहीं किया हो, वहां आप उनसे इस संदर्भ में, अत्यंत सटीक एवं संकीर्ण विकल्पों से अपनी नागरिकता सिद्ध करने के लिए कह रहे हैं। उनका वजूद है, यह वह पहले ही साबित कर चुके हैं (आधार कार्ड, राशन कार्ड, मनरेगा प्रमाणीकरण इत्यादि से), ये दस्तावेज जाने-माने हैं (ऐसी कई उपभोक्ता शिनाख्त प्रक्रियाएं हैं जिनके बिना आप इन दिनों फ़ोन नम्बर तक नहीं ले सकते या एक रुपया भी इधर-उधर नहीं भेज सकते), और फिर ये वही मतदाता हैं, जिन्होंने एक साल पहले ही अपनी पसंद की सरकार को वोट दिया था। बेशक, स्वच्छ चुनावों के लिए मतदाता सूची को अपडेट करना ज़रूरी है, लेकिन बिहार में वर्तमान विशेष गहन पुनरीक्षण बेहद दोषपूर्ण और संभवतः अलोकतांत्रिक प्रतीत होता है।

जब मैंने पहले आम चुनावों की अध्यक्षता की थी, तो हमें साजो-सामान पहुंचाने और बुनियादी ढांचा संबंधी भारी बाधाओं का सामना करना पड़ा था। फिर भी हमने यह सुनिश्चित किया कि देश के सबसे दूरदराज इलाकों में रहने वाले गरीब से गरीब नागरिकों का न केवल पंजीकरण हो, बल्कि उन्हें मतदान में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित भी किया जाए। यह एक नैतिक और संवैधानिक प्रतिबद्धता थी। कृपया यह याद रखना कि यदि मतदाता सूची से नाम काटने का औजार बन जाए, तो यह करके चुनाव आयोग न केवल जनप्रतिनिधित्व अधिनियम, बल्कि हमारे संविधान के अनुच्छेद 326 की मूल आत्मा का भी उल्लंघन करने का दोषी होगा।

दुखद है कि चुनाव आयोग संस्था, जिसे हमने कार्यपालिका के अतिक्रमण के खिलाफ एक सुरक्षा कवच के रूप में गढ़ा था, की राजनीतिक तटस्थता पर अब प्रश्न लगे हैं। लेकिन एक सार्वजनिक संस्था के जीवन में, धारणा और विश्वसनीयता उतनी ही महत्वपूर्ण हैं जितनी कि कार्रवाई। यहां चुनाव आयोग लोकतंत्र का प्रहरी है। इसे भय या पक्षपातमुक्त स्वर में बोलना चाहिए। सबसे बढ़कर, इसे अंतिम मतदाता का विश्वास जीतना चाहिए। सुनिश्चित हो कि आपका प्रत्येक कार्य, कथन और निर्णय आयोग की निष्पक्षता को पुष्ट करने वाला रहे। यदि वर्तमान सरकार सीमा पार करती है, तो यह आपकी ज़िम्मेदारी है कि आप उसे संकोच सहित नहीं, बल्कि संवैधानिक साहस के साथ खींचकर वापस लाएं। इतिहास उन चुनाव आयुक्तों को याद करेगा, जिन्होंने शक्तिहीन मतदाता की रक्षा की।

शुभमन के उभार से भारतीय किक्रेट में शुभ संकेत

जब जीत की खुशी से ज्यादा हार का डर बन जाए, तो मानस पर संदेह की परत चढ़ जाती है। सफलता की राह में बाधाएं खड़ी करने वाले इस स्व-निर्मित भय को मिटाने के लिए असाधारण प्रयासों की जरूरत पड़ती है।

जब सफलता और स्टारडम की एक समान चाहत रखने वाली भारतीय टीम का कप्तान शुभमन गिल को नियुक्त किया गया, तो पूरा भारत आशंकित था। एक ऐसे समाज के लिए जिसे शून्यता में रहने से डर लगता है, वह शून्यता जो 'दैवीय प्रकाश पुंज' के न रहने से बनती है, ऐसे में बेचैन बने अपने अस्तित्व को कुछ मायने और सार देने के लिए एक 'देवदूत' की बेतरह आकांक्षा करता है। भारत के क्रिकेट प्रेमी कल्पना भी नहीं कर सकते थे कि विराट कोहली और रोहित शर्मा के बिना उनकी दुनिया कैसी दिखेगी।

उनका 'परम प्रिय' कोहली दूर चला गया था, जिसने सालों तक एक राजा या मालिक की तरह 'सल्तनत' पर बादशाहत की। हमारे समय की सबसे प्रभावशाली क्रिकेट शख्सियत, जिसकी प्रशंसक पूजा करते हैं और टेलीविजन चैनलों का सबसे प्रिय। उसने इंग्लैंड में अपने साथियों के साथ टेस्ट मैच में जूझने की बजाय विंबलडन में टैनिस मैच देखना पसंद किया। क्या पता, टेस्ट रन औसत सूची में नीचे फिसलने का डर और लोगों की अपेक्षाओं का बोझ, रन बनाने और सैकड़ा मारने से मिलने वाली खुशी पर हावी हो गया हो।

रोहित शर्मा, सितारों वाली नखरेबाज़ी से सदा दूर, आम लड़के की छवि वाला, पर जिसने क्रिकेट में बहुत ऊंचा मुकाम हासिल किया। उसे यह अहसास करने में थोड़ा वक्त लगा कि उसका वक्त चुक गया है, आखिरकार, इंग्लैंड दौरे के लिए टीम चयन से एक दिन पहले उसने भी टेस्ट क्रिकेट से संन्यास लेने की घोषणा कर दी। ऐसे में किसी वरिष्ठ मार्गदर्शक की गैरमौजूदगी में, इंग्लैंड के कठिन और चुनौतीपूर्ण दौरे पर भारतीय टीम दिशाहीन स्थिति में पहुंच सकती था। घर में और विदेशों में, भारतीय टीम को मिली शृंखलाबद्ध हार की पृष्ठभूमि में, यह आशंका निराधार नहीं थी।

भारत ने लीड्स के मैदान में रक्षात्मक मानसिकता के साथ पहले टेस्ट मैच में कदम रखा, जो टीम चयन में परिलक्षित हो रहा था। जो आदमी अब सब फैसले लेने और टीम नियंत्रक प्राधिकारी के तौर पर पीछे बचा, वह था विवादास्पद कोच गौतम गंभीर। उसकी इस निर्विवाद शक्ति के पीछे ज्यादा बड़ा कारक है सत्तारूढ़ पार्टी का पूर्व सांसद होना बजाय इसके कि बतौर क्रिकेटर उसकी सम्मानजनक साख रही है या रणनीति या मानव-प्रबंधन कौशल की अच्छी समझ है, हालांकि कोलकाता नाइट राइडर के टीम-कोच के रूप में आईपीएल में वह काफी सफल रहा।

फुटबॉल के विपरीत, क्रिकेट में टीम का चेहरा इसका कप्तान होता है न कि कोच या मैनेजर। एक ऐसे खेल में, जो पांच दिन चलता है और मैदान में लिए जाने वाले फैसलों को दूर से बैठकर प्रेषित करना मुश्किल है, कप्तानी का काम कोच के आदेशों से नहीं चल सकता। इन जिम्मेदारियों का भार संभालने और विभिन्न क्षमताओं एवं स्वभावों वाले शेष दस साथी खिलाड़ियों को संभालने एवं अगुवाई करने का बोझ

पाकिस्तान की सीमा से लगे पंजाब के एक छोटे से गांव के एक युवा के कंधों पर आन पड़ा।

ग्रामीण पंजाब का एक लड़का, जिसके कृषक पिता ने खेती के साथ-साथ बेटे को पेशेवर क्रिकेटर बनाने में मेहनत की। शुभमन एक रूढ़िवादी आक्रामक, आवेगी व बिना सोचे-समझे काम करने वाले चरित्र जैसा नहीं है। भारतीय क्रिकेट जगत में उत्तर भारतीय बनाम शेष भारतीय विभाजन को लेकर खूब कहानियां रही हैं, कि एक पक्ष में 'बुद्धिमत्ता' का अभाव है तो दूसरा पक्ष 'अक्लमंदी' से परिपूर्ण है। धारणा की इस लड़ाई में, यह बहुत कम मायने रखता है कि अत्यंत शालीन, अपने हुनर में लगभग लयात्मक गेंद फेंकने वाले गेंदबाजों में एक रहे बिशन सिंह बेदी अमृतसर से एक सिख थे। चंडीगढ़ के लड़के युवराज सिंह की ताकत बाएं हाथ की शानदार और धमाकेदार बल्लेबाजी की धार से थी। शालीनता भरे व्यक्तित्व के खिलाड़ियों के इस क्रम में शुभमन गिल का स्थान तीसरा है, बेहतरीन हुनरमंद, जो टी-20 क्रिकेट के इस काल में भी 'बदसूरत स्ट्रोक' खेलने से परहेज करता है। मुक्त प्रवाह वाले उसके ड्राइव शॉट्स कीआर्क, शॉर्ट-आर्म पुल और गेंदबाज का मनोबल डिगाने के लिए क्रीज़ का इस्तेमाल करते हुए पिच की दूरी को छोटा या लंबा करने की समझ, एक सबक है कि कैसे बल्लेबाजी के जटिल कौशल में महारत हासिल की जाए। हम में से बहुतों को लगता था उसमें एक खामी है-बॉलिंग लाइन से हटकर खेलने की हड़बड़ी-जोकि इंग्लैंड के मौसम में तेज अथवा फिरकी पिचों पर घातक साबित हो सकती है। स्पष्ट रूप से उसे अपनी इस कमी का भान हो गया था, उसने बहुत अभ्यास कर इस पर काबू पा लिया और एक बार भी पुरानी गलती नहीं दोहराई। रिकॉर्डतोड़ रनों का अंबार पाकर गिल ने खुद को उस सर्वोच्च शिल्पकार के रूप में दर्शा दिया है, जिसकी उत्कृष्टतम स्तर की पेशकारी के पीछे की गई कड़ी मेहनत छिपी रही है। जिम्मेदारी का भारी बोझ उसके कंधों पर आकर हल्का प्रतीत हो रहा है। लीड्स टेस्ट मैच लगभग उसका रहा, जब अपने खेल से भारत को हावी रखा, हालांकि समाप्ति हार में हुई। यह झटका मजबूत से मजबूत खिलाड़ी को डांवाडोल कर सकता था और कप्तान को तो अपनी अगली योजनाओं के रणनीतिक कार्यान्वयन में और भी अधिक असुरक्षित बना देता। लेकिन, दूसरे टेस्ट मैच में मिली जीत ने दर्शा दिया कि टीम सही रास्ते पर थी और इसने अपने आलोचकों से ज्यादा अच्छी तरह इस बात का मोल समझ लिया कि 'वीरता में विवेक का बड़ा हाथ होता है'। हम नहीं जानते कि खांटी कोच गौतम गंभीर के साथ शुभमन की पटड़ी कितनी बैठ रही है और क्या करना है और क्या नहीं करना है, इसको लेकर दोनों ने अपनी-अपनी लाइन तय कर ली है या नहीं। आगे की डगर लंबी एवं कठोर है और यात्रा अभी शुरू हुई है।

प्रदीप मैगज़ीन

आगे शृंखला क्या आकार लेगी, इसके बारे निश्चित तौर पर कुछ नहीं कहा जा सकता। लेकिन इतना तय है शुभमन मृदुभाषी किंतु दृढ़ है, अनिश्चितता बेशक हो, किंतु आत्मविश्वास से लबरेज, अपनी टीम के साथियों पर नियंत्रण भी रखता है लेकिन साथ ही उनको उचित दायरा और सम्मान भी प्रदान करता है। स्थाई मुस्कुराहट वाले शुभमन का यह गुण अब जाकर उजागर हुआ है।

कप्तानी की कला केवल खिलाड़ियों पर चिल्लाना और डांटना नहीं है। यह बिना राय बदले, शांतचित्त और विनम्रता से दक्ष बने रहना है। टेलीविजन चैनलों को टीआरपी रेटिंग बटोरने के लिए अब कोहली की फुटेज बार-बार दोहराने की जरूरत नहीं पड़ने वाली। गिल की मनोहर मुस्कान हजारों उत्पाद लॉन्च कर सकती है। भारत को एक नया 'आदर्श नायक' मिल गया है।

आतंकी फिरोज को पकड़ने वाले एसआईएण्ड आरक्षक को मिला आउट ऑफ टर्न प्रमोशन

माही की गूंज, रतलाम।

राजस्थान के जयपुर में सीरियल ब्लास्ट की साजिश रचने वाले प्रतिबंधित आतंकी संगठन अलसूफा के सदस्य और पांच लाख के इनामी आतंकी फिरोज खान उर्फ सब्जी को पकड़ने वाले रतलाम पुलिस के दो जांबाजों को आउट ऑफ टर्न प्रमोशन दिया गया है।

इस साहसिक अभियान को अंजाम देने वाले एसआई सत्येंद्र रघुवंशी को इंस्पेक्टर और कार्यवाहक प्रधान आरक्षक राहुल जाट को वास्तविक प्रधान आरक्षक बनाया गया है।

जान पर खेलकर की डेढ़ साल तक निगरानी

आतंकी फिरोज की गिरफ्तारी के लिए दोनों पुलिसकर्मियों ने करीब डेढ़ साल तक अपनी पहचान छिपाकर रेकी की। मुंह पर कपड़ा बांधकर और लंबी दाढ़ी रखकर उन्होंने फिरोज के रिश्तेदारों और संभावित ठिकानों पर निगरानी रखी। सैकड़ों मुखबिरों का नेटवर्क खड़ा किया गया। बांसवाड़ा और अहमदाबाद तक उसकी तलाश में टीमें भेजी गईं, लेकिन आतंकी बार-बार भाग निकलता था। इस दौरान एक चूक उनकी जान के लिए खतरा बन सकती थी, लेकिन दोनों डटे रहे, पीछे नहीं हटे। पुलिस मुख्यालय ने दोनों की इस जांबाजी और अदम्य साहस की सराहना की है।

गिरफ्तारी के दौरान किया हमला, फिर भी नहीं हारे हौसला

दो अप्रैल 2025 को रतलाम की आनंद कॉलोनी में फिरोज अपनी बहन रेहाना के शेरानीपुरा स्थित घर में छिपा हुआ था। जब पुलिस उसे पकड़ने पहुंची, तो वह भागने की कोशिश करने लगा। उसने एसआई रघुवंशी और प्रधान आरक्षक जाट पर हमला कर दिया। रघुवंशी को नीचे गिरा दिया और जाट को लात मारकर गिरा दिया। फिर अंदर से कमरा बंद कर लिया और घर के पीछे बने छज्जे से कूदकर फरार होने की कोशिश की। लेकिन दोनों ने पीछा नहीं छोड़ा और उसे पकड़ ही लिया। इस संघर्ष में दोनों जवानों को चोटें आईं, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी और पूरे ऑपरेशन को सफलतापूर्वक अंजाम दिया।

एसपी ने बताया प्रेरणादायक कदम

रतलाम एसपी अमित कुमार ने बताया कि इन दोनों जवानों की बहादुरी से न सिर्फ एक खूंखार आतंकी पकड़ा गया, बल्कि इससे पूरे विभाग का मनोबल भी बढ़ा है। उन्होंने कहा कि यह सम्मान पूरे पुलिस बल के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा।

अब इंस्पेक्टर बने सत्येंद्र रघुवंशी

सत्येंद्र रघुवंशी, जो फिलहाल ढोढर चौकी प्रभारी हैं, को अब इंस्पेक्टर पद पर पदोन्नत किया गया है। वे 2017 बैच के सब इंस्पेक्टर हैं और विदिशा जिले के रहने वाले हैं। उनकी पहली पोस्टिंग रतलाम में हुई थी और वे सालाखेड़ी, मावता व केलकच्छ जैसी चौकियों में प्रभारी के रूप में सेवाएं दे चुके हैं।

राहुल जाट को मिला वास्तविक प्रधान आरक्षक का दर्जा

राहुल जाट, जो वर्तमान में बिलपांक थाने में पदस्थ हैं, को वास्तविक प्रधान आरक्षक बनाया गया है। वे 2005 में पुलिस सेवा में भर्ती हुए थे और अब तक माणक चौक, स्टेशन रोड, नामली व औद्योगिक थाना क्षेत्र में अपनी सेवाएं दे चुके हैं। 2021 में उन्हें कार्यवाहक प्रधान आरक्षक बनाया गया था, जो अब वास्तविक रूप में लागू हो गया है।

आतंकी साजिश का था बड़ा जाल

इस मामले की जड़ें 30 मार्च 2022 से जुड़ी हैं, जब राजस्थान के निंबाहेड़ा में रतलाम के तीन आतंकियों को 12 किलो आरडीएक्स के साथ पकड़ा गया था। वे जयपुर में सीरियल ब्लास्ट की साजिश रच रहे थे। कुल 11 आरोपियों में से 10 रतलाम के निवासी हैं, जो आतंकी नेटवर्क में सक्रिय थे।

अटकी जमीनों की रजिस्ट्रियां, डेढ़ महीने से नहीं मुख्य जिला पंजीकृत अधिकारी

माही की गूंज, रतलाम।

रतलाम जिले में रजिस्ट्रियों के लिए लोग कार्यालय के चक्कर काट-काट कर परेशान हो रहे हैं।सालाना 150 करोड़ रुपए से ज्यादा का राजस्व देने वाले जिला पंजीयक विभाग में डेढ़ महीने से फुल फ्लैश मुख्य जिला पंजीयक नहीं है। ऐसी रजिस्ट्रियां जिनमें उप पंजीयकों को लगता है कि स्टाम्प ड्यूटी कम है या लाइव लोकेशन में कोई परेशानी है, कच्ची सड़क की जगह डामर की सड़क बनी है तो वे अटक गई हैं।

ऐसे मामले मुख्य जिला पंजीयक के पास जाते हैं और वे इसका निराकरण करते हैं। स्टाम्प ड्यूटी बढ़ाना है तो वे बढ़ाते और रजिस्ट्रियां हो जाती हैं। इससे क्रेता और विक्रेता दोनों परेशान हो रहे हैं। यदि मुख्य जिला पंजीयक की स्थायी नियुक्ति हो तो अपील हो सकेगी और रुकी हुई रजिस्ट्रियां हो सकेंगी। हैं

डेढ़ महीने पहले तक यूसुफ खान मुख्य जिला पंजीयक का काम देख रहे थे। उनका तबादला राजगढ़ हो गया है। इसके बाद ट्रांसफर के सीजन में मंजूलता पटेल को मुख्य जिला पंजीयक बनाया गया लेकिन उन्होंने भी ज्वाइन नहीं किया। इसके बाद दो सप्ताह पहले मंदसौर के मुख्य जिला पंजीयक प्रशांत पराशर को रतलाम का प्रभार दिया गया। उन्हें सप्ताह में दो दिन गुरुवार और शुक्रवार को यहां का काम देखना है। वे भी पिछले सप्ताह नहीं आए। ऐसे में खरीदार और विक्रेताओं की परेशानी दूर नहीं हो पा रही है और वे रोजाना परेशान हो रहे हैं। जबकि शहर में 60 से 70 दस्तावेजों का पंजीयन रोजाना होता है। इसके बाद भी ये हाल हैं। इतना राजस्व देने के बाद भी कोई देखने और सुनने वाला नहीं है।

मुख्य जिला पंजीयक के साथ एक उप पंजीयक की नियुक्ति जरूरी प्रॉपर्टी व्यवसायी संघ के राजकमल जैन ने बताया कि इतना बड़ा शहर है और फुल फ्लैश किसी की नियुक्ति नहीं की गई है। इससे डेढ़ महीने से विभाग रामभरोसे ही चल रहा है। जल्द नियुक्ति होना चाहिए। वहीं विभाग में दो ही उप पंजीयक हैं। इससे एक और पंजीयक की नियुक्ति भी होना चाहिए ताकि काम में तेजी आ सके।

मप्र से राजस्थान के लिए इस दिन से शुरू होगा फोरलेन हाईवे का निर्माण कार्य

माही की गूंज, मंदसौर।

मध्य प्रदेश में विकास को रफ्तार देने के लिए मुख्यमंत्री मोहन यादव के द्वारा एक बड़े इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट पर जल्द काम शुरू किया जाएगा। नीमच से राजस्थान के झालावाड़ तक एक नया फोरलेन हाईवे का निर्माण किया जाएगा।

इस नए हाईवे के निर्माण से मध्य प्रदेश और राजस्थान के बीच आवाजाही आसान हो जाएगी और कम समय में मध्य प्रदेश से राजस्थान की दूरी तय होगी। नए फोरलेन हाईवे के निर्माण से सिर्फ मप्र ही नहीं बल्कि राजस्थान को भी काफी फायदा होगा।

इन जिलों का तेजी से होगा विकास

इस फोरलेन प्रोजेक्ट का सबसे बड़ा लाभ नीमच,मंदसौर और रतलाम जिले को मिलने वाला है। अभी तक कनेक्टिविटी के वजह से यह सभी जिले पिछड़े हुए हैं लेकिन हाईवे का निर्माण होने के बाद यहां परिवहन के सुविधा बेहतरीन हो जाएगी जिससे व्यापार बढ़ेगा साथी युवाओं को रोजगार के अवसर भी मिलेंगे।

रोजगार और उद्योग को मिलेगा बढ़ावा

इस नई सड़क परियोजना से कनेक्टिविटी नहीं बढ़ेगी बल्कि मध्य प्रदेश के कई जिलों में आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन भी देखने को मिलेगा। ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले युवाओं को रोजगार के नए अवसर मिलेंगे। इस हाइवे के आसपास के क्षेत्र का तेजी से विकास होगा।

जमीन के रेट में होगी तेजी से बढ़ोतरी

इस हाइवे के निर्माण से नीमच, मंदसौर और झालावाड़ के आसपास की जमीन की रेट काफी बढ़ जाएगी। किसानों को काफी फायदा होगा साथ ही साथ छोटे-मोटे व्यापारी को भी बढ़ावा मिलेगा। जल्द ही इसका निर्माण कार्य शुरू हो जाएगा।

इसके लिए जल्द ही भूमि अधिग्रहण का कार्य शुरू किया जाएगा। मध्य प्रदेश राजस्थान तक इस नए फोरलेन हाईवे का निर्माण कार्य पूरा होने से कम समय में मध्य प्रदेश से राजस्थान की दूरी तय हो जाएगी। इसकी वजह से राज्य का विकास भी होगा साथ ही साथ रोजगार के नए अवसर भी खुलेंगे। यह बेहद खास हाईवे होगा।

साइबर फ्रॉड से जुड़े 7900 मोबाइल नंबर किए ब्लॉक

माही की गूंज, रतलाम।

सायबर फ्रॉड के बढ़ते मामलों के दृष्टिगत पीड़ितों को त्वरित सहायता उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से सायबर हेल्पलाइन नंबर 7049127420 जारी किया गया है। हेल्पलाइन पर या सायबर सेल में प्राप्त होने वाली शिकायतों पर एनसीआरपी पोर्टल के माध्यम से कंप्लेन रजिस्टर कर फाडेन्ट अमाउंट को फिज करवाने की कार्यवाही भी की जा रही है।

सायबर फॉडस्टर धोखाधडी करने के लिए फर्जी बैंक खाते एवं फर्जी मोबाइल नंबर्स का उपयोग करता है। इस प्रकार के नंबर्स की पहचान कर ब्लॉक करवाने की कार्रवाई की जा रही है।

पुलिस अधीक्षक अमित कुमार के निर्देशन एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक राकेश खाखा के मार्गदर्शन में सायबर सेल टीम द्वारा ऐसे 3400 से अधिक मोबाइल नंबर्स जो सायबर फ्रॉड से संबंधित गतिविधियों में संलिप्त पाए गए है उन नंबर्स को चिह्नित कर के ब्लॉक करवाए गए। इन मोबाइल नंबर्स का फोर्डस्टर्स द्वारा उपयोग नहीं किया जा सकेगा। रतलाम पुलिस द्वारा अभी तक 7,900 फ्रॉड मोबाइल नंबर्स ब्लॉक कराए जा चुके है।

डैमेज काबुली चना को लेकर प्रशासन की बड़ी कार्रवाई

माही की गूंज, रतलाम।

मध्यप्रदेश राज्य के रतलाम जिले में डैमेज काबुली चना को लेकर प्रशासन ने पड़ी कार्रवाई की है। प्रशासन द्वारा इस कार्रवाई के तहत फायदा बाजार पर डैमेज काबुली चना को लेकर डेढ़ लाख रुपए का जुर्माना भी लगाया गया है।

बता दें कि रतलाम जिले में पिछले कुछ दिनों से मिलावट के विरुद्ध कार्रवाई जारी है। एडीएम न्यायालय ने सज्जन मिल रोड स्थित फायदा बाजार पर 1.50 लाख रुपए का जुर्माना लगाया है। वहीं नामली स्थित सांची पार्लर पर भी पानी की बोतल में कचरा निकलने पर 50 हजार रुपए का जुर्माना किया गया है।

पिछले साल खाद्य एवं औषधि विभाग ने फायदा बाजार पर जांच की थी। यहां से काबुली चने का सैंपल लिया था। यह डैमेज हो रहा था और इस पर छेद हो रहे हैं। विभाग ने इसे जांच के लिए राज्य प्रयोगशाला भोपाल भेजा। जहां से जांच रिपोर्ट में यह अवमानक वहीं निकला। इसके बाद मामला एडीएम न्यायालय में चला। एडीएम ने फायदा बाजार पर 1.50 लाख रुपए का जुर्माना लगाया है। नामली उपमंडी स्थित दिव्यांशी सांची पार्लर उदयपुर की घराना डिंकिंग वाटर कंपनी की एक लीटर पानी की बोतल का सैंपल भी लिया था। यह भी अमानक निकला और इसमें कचरा पाया गया। यह मामला भी चला और न्यायालय ने कंपनी पर 50 हजार का जुर्माना लगाया है। अब इन्हें एक महीने में जुर्माना जमा कराना है या जिला न्यायालय में अपील करनी होगी।

मिलावट के खिलाफ कार्रवाई जारी, चाय पत्ती के सैंपल लिए

मिलावट को लेकर खाद्य एवं औषधि विभाग की कार्रवाई जारी है। खाद्य सुरक्षा अधिकारी कमलेश जमरा ने ग्राम बरखेड़ा कला में जांच की। यहां सेठिया किराना से चाय पत्ती, चावल का सैंपल लिया। वहीं मुकेश किराना से भी चाय पत्ती, जयमाता दी ट्रेडर्स से सेव, साबूदाना एवं घी के सैंपल लिए गए। निरीक्षण के दौरान गंदगी मिलने पर दुकान संचालकों को स्वच्छता बनाए रखने के निर्देश दिए हैं।

दो लाख से ज्यादा की एमडीएमए के साथ एक आरोपी गिरफ्तार

माही की गूंज, रतलाम।

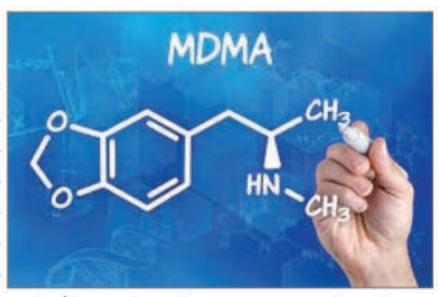

जिले की पुलिस को अवैध मादक पदार्थ की तस्करी के मामले में लगातार सफलता मिल रही है। आधी रात को गश्त के दौरान हाइवे पर दो लाख दस हजार की एमडीएमए की तस्करी करते हुए एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी से एक मोबाइल व नगदी भी बरामद हुई। पुलिस आरोपी से पूछताछ करने में जुट गई।

पुलिस अधीक्षक अमित कुमार के निर्देश पर जिले में चलाये जा रहे चेकिंग व गश्त की सक्रियता के चलते पुलिस को अवैध मादक पदार्थ की तस्करी में लगातार सफलता मिल रही है। बिलपांक पुलिस को मुखबिर सुचना के आधार पर आधी रात को गश्त के दौरान यात्री प्रतिक्षालय इंदौर रोड सातरुण्डा से तस्करी करते हुए सुरेश पिता किसनाराम बिश्नोई 32 वर्षीय निवासी ग्राम पुर तहसील सांचोर जिला जालोर राजस्थान को गिरफ्तार किया गया है। आरोपी से 72 ग्राम मादक पदार्थ एमडीएमए जिसकी किमती करीबन 2,10,000 रुपये, एक रियलमी कंपनी का एंड्रोईड मोबाईल फोन, आधार कार्ड व नगदी 1850 रुपये बरामद किए गए।

पुलिस ने गिरफ्तार आरोपी पर एनडीपीएस के तहत मामला दर्ज किया साथ ही आरोपी के अवैध मादक पदार्थ की तस्करी के मामले में पूछताछ करने में जुट गई है।

पन्नालाल सेन का अनूठा विरोध

माही की गूंज, मंदसौर।

जिले कलेक्टर कार्यालय में जनसुनवाई के दौरान एक अनोखा नजारा देखने को मिला। दलोदा तहसील के लाला खेड़ा गांव के निवासी पन्नालाल सेन पूरे शरीर पर केले के पत्ते लपेटकर अपनी शिकायत लेकर पहुंचे। यह कोई मजाक या नाटक नहीं था, बल्कि एक आम नागरिक की सरकारी जमीन को अवैध कब्जे से बचाने की जिद और हिम्मत थी। पन्नालाल का यह अनोखा प्रदर्शन न केवल प्रशासन का ध्यान खींचने में कामयाब रहा, बल्कि सोशल मीडिया पर भी चर्चा का विषय बन गया।

पन्नालाल सेन की लड़ाई

पन्नालाल सेन एक साधारण किसान हैं, जो न तो कोई जनप्रतिनिधि हैं और न ही कोई बड़ा अधिकारी। फिर भी, उन्होंने अपने गांव की सरकारी जमीन पर हो रहे अवैध कब्जे के खिलाफ आवाज उठाई। पन्नालाल का कहना है कि उन्होंने एक साल पहले इस मामले में शिकायत दर्ज की थी, लेकिन प्रशासन ने कोई ठोस कार्रवाई नहीं की। उनके मुताबिक, गांव की शासकीय जमीन पर एक निजी धर्मशाला बन चुकी है, जो सार्वजनिक उपयोग के लिए थी. यह जमीन गांव के हित में इस्तेमाल होनी चाहिए थी, लेकिन अवैध कब्जे के कारण इसका दुरुपयोग हो रहा है।

पन्नालाल बताते हैं, ''मैंने कई बार प्रशासन से गुहार लगाई, लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई। मजबूरी में मुझे यह अनोखा तरीका अपनाना पड़ा।'' केले के पत्तों में लिपटकर कलेक्ट्रेट पहुंचने का उनका यह कदम उनकी व्यथा और हताशा को दर्शाता है। वे अपनी जेब से खर्च करके, बार-बार प्रशासन के चक्कर काट रहे हैं, ताकि सरकारी जमीन को अतिक्रमण से बचाया जा सके। जहां एक ओर लोग सरकारी संपत्ति हड़पने में लगे हैं, वहीं पन्नालाल जैसे लोग सरकार को उसका हक दिलाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

प्रशासन का जवाब क्या रहा?

इस मामले में दलोदा के एसडीएम शिवलाल शाक्य ने बताया कि पन्नालाल की शिकायत पर पहले से ही शासकीय आदेश जारी हो चुके हैं और मामला शासन के अधीन है। उन्होंने कहा, ÷यह मामला पहले से चल रहा था, और हम इसे गंभीरता से देख रहे हैं।÷ हालांकि, पन्नालाल का कहना है कि आदेशों के बावजूद जमीन पर अवैध कब्जा अब भी बना हुआ है, और कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया।

पन्नालाल का यह प्रदर्शन प्रशासन के लिए एक बड़ा सवाल खड़ा करता है कि क्या उनकी शिकायत पर अब गंभीरता से कार्रवाई होगी, या यह मामला भी फाइलों में दबकर रह जाएगा। पन्नालाल की इस ईमानदार कोशिश ने न केवल अधिकारियों का ध्यान खींचा, बल्कि आम लोगों को भी यह सोचने पर मजबूर किया कि सरकारी जमीन को बचाने के लिए एक आम नागरिक को इतना बड़ा कदम उठाना पड़ रहा है।

क्यों है यह प्रदर्शन खास?

पन्नालाल सेन का केले के पत्तों में लिपटकर कलेक्ट्रेट पहुंचना सिर्फ एक विरोध प्रदर्शन नहीं, बल्कि एक आम नागरिक की हिम्मत और जज्बे की मिसाल है। यह घटना दर्शाती है कि जब प्रशासन अपनी जिम्मेदारी न निभाए, तो लोग अपने हक के लिए कितने अनोखे तरीके अपना सकते हैं। मंदसौर जैसे छोटे शहर में यह प्रदर्शन स्थानीय लोगों के बीच चर्चा का विषय बन गया है। सोशल मीडिया पर वायरल हुए वीडियो में पन्नालाल को केले के पत्तों में लिपटे हुए देखकर लोग उनकी हिम्मत की तारीफ कर रहे हैं।

यह प्रदर्शन न केवल सरकारी जमीन पर अवैध कब्जे की समस्या को उजागर करता है, बल्कि यह भी दिखाता है कि एक आम आदमी अपनी बात को मनवाने के लिए कितना कुछ कर सकता है। पन्नालाल की यह कोशिश उन सभी लोगों के लिए प्रेरणा है, जो अपने हक के लिए लड़ना चाहते हैं, लेकिन सिस्टम की अनदेखी का शिकार हो रहे हैं।

बांध प्रभावितों ने उठाई मुआवजे की मांग

माही की गूंज, खरगोन।

महेश्वर जलविद्युत परियोजना से प्रभावित ग्रामीणों ने मंगलवार को मंडलेश्वर पहुँचकर मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा। ग्रामीणों ने मांग की कि वर्षों से अधर में लटकी इस परियोजना का कार्य पुनः शुरू किया जाए और शेष बचे हुए गांवों के लोगों को तत्काल मुआवजा व पुनर्वास की सुविधा दी जाए।

ग्रामीणों के अनुसार, 1993 में शुरू की गई इस परियोजना का लक्ष्य 400 मेगावाट विद्युत उत्पादन था, जिसमें 40-40 मेगावाट की 10 इकाइयां प्रस्तावित थीं। लेकिन आज तक केवल तीन इकाइयां ही तैयार हो सकी हैं और शेष कार्य बंद पड़ा है।

ग्रामीणों का आरोप है कि परियोजना से प्रभावित 27 गांवों

में से 12 गांवों के लोगों को अब तक न तो मुआवजा मिला है और न ही पुनर्वास की व्यवस्था हुई है। डूब क्षेत्र में शामिल होने के कारण उन्हें शासकीय योजनाओं का लाभ नहीं मिल रहा है, और वे सामाजिक रूप से भी कई समस्याओं का सामना कर रहे हैं।

जिन लोगों को मुआवजा मिला भी है, उन्हें पुनर्वास की भूमि न मिलने के कारण उनकी राशि धीरे-धीरे खत्म होती जा रही है। इस कारण वे और अधिक आर्थिक संकट में फंसते जा रहे हैं।

ग्रामीणों ने मुख्यमंत्री से अनुरोध किया कि वे इस मुद्दे में शीघ्र हस्तक्षेप करें, परियोजना का कार्य फिर से प्रारंभ कराया जाए और सभी शेष प्रभावितों को न्याय दिलाया जाए।

छत से गिरे दो मजदूर, एक गंभीर

माही की गूंज, खंडवा।

खंडवा के नर्मदानगर स्थित औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान में मंगलवार दोपहर उस समय अफरा-तफरी मच गई, जब छत पर काम कर रहे दो मजदूर करीब 15 फीट नीचे गिर गए। हादसे में एक मजदूर को गंभीर चोटें आई हैं, जिसे इंदौर के एक निजी अस्पताल में गहन चिकित्सा कक्ष में भर्ती कराया गया है।

घटना उस समय हुई जब पुरानी सीमेंट की चादरें हटाकर टीन की नई शेड लगाई जा रही थी। काम कर रहे मजदूरों में से बीनू दरबार का अचानक संतुलन बिगड़ा और वह नीचे गिरने लगा, लेकिन लोहे की एंगल पकड़कर लटक गया। उसे बचाने के लिए साथ में मौजूद अनू जोया ने सुरक्षा पट्टा नीचे फेंका ताकि वह सुरक्षित उतर सके। जैसे ही बीनू पट्टा बांधकर नीचे उतरने लगा, छत पर भार बढ़ने से चादरें टूट गईं और अनू जोया भी नीचे गिर पड़ा।

इस दौरान वहां मौजूद अन्य मजदूरों ने दौड़कर दोनों को संभाला। बीनू दरबार को मामूली चोटें आईं, लेकिन अनू जोया गंभीर रूप से घायल हो गया। परिजन उसे इंदौर ले गए, जहां डॉक्टरों ने उसकी हालत नाजुक बताई है।

घटना का वीडियो भी सामने आया है, जिसे एक मजदूर ने अपने मोबाइल से रिकॉर्ड किया था।

आईटीआई प्रबंधन के अनुसार यह मरम्मत कार्य राष्ट्रीय जलविद्युत निगम द्वारा कराया जा रहा है और इसके लिए इंदौर की एक निजी कंपनी को ठेका दिया गया है। पहले भी परिसर में छत बदली जा चुकी है, लेकिन इस तरह की घटना पहली बार हुई है।

मेवाड़ा कलाल समाज समिति का शपथ ग्रहण समारोह संपन्न

माही की गूंज, झाबुआ।

मेवाड़ा कलाल समाज झाबुआ-अलीराजपुर क्षेत्र के विर्वाचित पदाधिकारियो का शपथ विधि समारोह बुधवार कों कलाल समाज वाटिका मिंडल झाबुआ मे संपन्न हुआ । कार्यक्रम के मुख्य अतिथि संजय गुप्ता अहमदाबाद थे।

कार्यक्रम मे क्षेत्र के लगभग 15 मंडलो के अध्यक्षों व राजस्थान गुजरात आदि ने इस कार्यक्रम मे सिरकत की। साथ अनेक समाजजनों ओर महिलाओ ने इस कार्यक्रम मे सम्मिलित होकर कार्यक्रम की शोभा बधाई ।

कार्यक्रम की शुरुआत गणेश वंदना से हुई ओर सभी उपस्थित वरिष्ठजनों ने कलाल समाज के आराध्यदेव श्री सहस्त्रबाहु अर्जुनदेव के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की शुरुआत की गई ।

सर्वप्रथम कार्यक्रम मे समाज के अध्यक्ष रमेश चंद्र भटेवरा रायपुरिया वाले ने अध्यक्ष पद की ओर साथ ही उनकी कार्यकारिणी ने शपथ ली। उसके पश्चात् कलाल समाज कल्याण ट्रस्ट के अध्यक्ष दिनेशचंद्र भानपुरिया भगोर वाले ओर उनकी कार्यकारिणी ने शपथ ग्रहण कर समाज मे एक नई ऊर्जा के साथ समाज विकास की बागडोर थामी ।

सिविल अस्पताल में हुआ रक्त दान

माही की गूंज , पेटलावद।

मंगलवार को सिविल हॉस्पिटल रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया । सीएमएचओ डॉ बी एस बघेल , सीबीएमओ डॉ एम एल चोपड़ा एव डीएमपी राजाराम खन्ना के मार्गदर्शन में सामुदायिक स्वस्थ्य कर्मचारी संगठन पेटलावद द्वारा किये गए रक्तदान शिविर में 103 रक्तदाताओं ने किया रक्तदान।

सामुदायिक स्वस्थ्य अधिकारी संगठन ने रक्तदान शिविर के पूर्व किया था 108 रक्तदाताओं का ऑनलाइन पंजीयन , भारी बारिश के बाद भी रक्तदाताओं ने रक्तदान करने में बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया । रक्तदाताओं को लाने ले जाने के लिये संगठन ने वाहन की भी व्यवस्था करि जिससे संगठन ने 100 से अधिक रक्तदाताओं से रक्तदान करवाने का लक्ष्य पूर्ण किया।संगठन ने विभाग को आश्वस्त किया कि जब भी जिले की ब्लड बैंक में ब्लड की कमी रहेगी संगठन ऐसे केम्प लगा कर ब्लड बैंक में ब्लड की पूर्ति करवाने में पूर्ण मदद करेगा। रक्तदान शिविर में सीएमएचओ डॉ बीएस बघेल, सीबीएमओ डॉ एम् एल चोपड़ा , सिविल अस्पताल से सीनियर डॉ जीएस चोयल , डॉ उर्मिला चोयल , डीएमपी आर आर खन्ना प्राथमिक स्वस्त्य केंद्र रायपुरिया के डॉ प्रताप भूरिया एव सिविल हॉस्पिटल का समस्त स्टाप मौजूद रहा एवं सामुदायिक स्वस्त्य अधिकारी संघ के रक्तदान शिविर कार्य की सराहना की गई।

राज्य किक बॉक्सिंग प्रतियोगिता में जीता पदक

माही की गूंज, बड़वानी।

सेंधवा की भव्या शर्मा ने मध्यप्रदेश राज्य किक बॉक्सिंग प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन करते हुए रजत पदक अपने नाम किया है। यह प्रतियोगिता 12 और 13 जुलाई को इंदौर पब्लिक स्कूल में आयोजित की गई थी।

भव्या ने 13 वर्ष आयु वर्ग की 50 किलोग्राम भार श्रेणी में भाग लिया और दमदार खेल, अनुशासन व तकनीकी कौशल का बेहतरीन प्रदर्शन किया। इस प्रतियोगिता में मध्यप्रदेश के 10 जिलों से 320 से अधिक खिलाड़ियों ने भाग लिया।

भव्या, एमेच्योर स्पोर्ट्स किक बॉक्सिंग संघ बड़वानी और सेल्फ डिफेंस मार्शल आर्ट्स अकादमी इंडिया से जुड़ी हुई हैं। उनके प्रशिक्षक समित चौधरी ने उन्हें मेहनती और समर्पित खिलाड़ी बताया।

प्रतियोगिता में टीम प्रबंधन की जिम्मेदारी कृतिका जोशी ने निभाई। भव्या की इस सफलता पर उनके परिवार ने खुशी जताई है। अब भव्या का चयन चेन्नई में आयोजित होने वाली वाको राष्ट्रीय किक बॉक्सिंग प्रतियोगिता 2025 के लिए किया गया है। परिवार और शिक्षकों ने उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर सफलता के लिए शुभकामनाएं दी हैं।

स्कूल से बाहर शोच को गई छात्रा से दुष्कर्म

माही की गूंज, खंडवा।।

स्कूल की नाबालिग छात्रा का अपहरण कर उससे दुष्कर्म करने वाले आरोपी को गिरफ्तार किया गया। न्यायालय मं पेश करने के बाद उसे जेल भेजा गया। स्कूल में टॉयलेट न होने की वजह से छात्रा लंच ब्रेक में शौच के लिए स्कूल के पीछे गई थी। यहां आरोपी उसे पकड़कर झाड़ियों में ले गया उससे दुष्कर्म किया।

घटना मांधाता क्षेत्र में सोमवार दोपहर को हुई। बुधवार को इसकी शिकायत हुई । पुलिस ने एफआईआर के बाद तत्काल आरोपी को गिरफ्तार किया और न्यायालय में पेश किया जहां आरोपी को जेल भेजा। आरोपी मनसिंह उर्फ मानसिंह (22) ने जिस लड़की से दुष्कर्म किया वह कक्षा 8में पढ़ती है। वह लंच ब्रेक के दौरान शौच के लिए स्कूल के पीछे गई थी वहां उसका अपहरण करके दुष्कर्म किया। वहां पहुंचे आरोपी ने छात्रा का अपहरण कर उसे झाड़ियों तरफ ले गया। छात्रा के साथ दरिंदगी की। घटना के बाद से घबराई छात्रा घर पहुंची और परिजन को आपबीती सुनाईं। परिजन थाने गए और आरोपी के खिलाफ केस दर्ज कराया। घटनाक्रम के बाद सामने आया कि गांव के सरकारी स्कूल में टॉयलेट नहीं था। स्कूल में जो टॉयलेट था वह शक्तिग्रस्त है। इस कारण मासूम बच्चियों को स्कूल के पीछे जाना पड़ता है।

किसानों को नहीं मिल रहा खाद, कांग्रेस ने दी चेतावनी

माही की गूंज, बड़वानी।

बड़वानी जिले के पानसेमल में रासायनिक खाद की भारी कमी से किसान बेहद परेशान हैं। बुधवार को ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के नेतृत्व में किसानों और कार्यकर्ताओं ने नगर के मुख्य मार्गों पर रैली निकाली।

प्रदर्शनकारियों ने पानसेमल थाना पहुँचकर राज्यपाल के नाम तहसीलदार सुनील सिसोदिया और थाना प्रभारी मंशाराम वगेने को ज्ञापन सौंपा। कांग्रेस नेता पोरलाल खरते ने कहा कि किसानों को खाद के लिए घंटों पंक्ति में खड़ा रहना पड़ रहा है।

कांग्रेस ने जिला प्रशासन को तीन दिन का समय दिया है। यदि इस अवधि में खाद की आपूर्ति सुनिश्चित नहीं हुई, तो उग्र आंदोलन की चेतावनी दी गई है। इस समय खरीफ की फसलों को रासायनिक खाद की अत्यंत आवश्यकता है। किसान खेती छोड़कर खाद की व्यवस्था में लगे हैं।

कार्यक्रम में लोकसभा चुनाव के कांग्रेस प्रत्याशी पोरलाल खरते, आदिवासी कांग्रेस प्रकोष्ठ के जिला अध्यक्ष मोंटा खेड़कर, रतन सिंह खेड़कर सहित अनेक कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

सच दिखाती फिल्म उदयपुर फाईल्स के प्रदर्शन से किस राजनीतिक दल और संगठन को हानि

माही की गूंज, झाबुआ।

भारत देश जहां अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता हमें संविधान प्रदत्त करता है, वहां दयनीय स्थिती यह है कि सच को सामने लाने उसे फिल्म के माध्यम से बहुप्रसारित करने पर समुदाय विशेष द्वारा उस पर रोक लगाई जाती है और बाकी सारे हाथ बांधे कोर्ट के निर्णय का इस तरह प्रतिक्षा करते हैं जैसे उन्हें घट चुकी घटना से कोई सरोकार नहीं, फिर यदी कोई और घटना ऐसी घट भी जाएगी तो उन्हें किसी बात का अफसोस नहीं होगा। यदी कोई सच्चाई का विरोध कर रहा है तो सच का साथ देने वालों को उसके विरोध का विरोध अवश्य ही करना चाहिए।

28 जून 2022, को राजस्थान के उदयपुर में दो मुस्लिम पुरुष मोहम्मद रियाज अत्तारी और गौंस मोहम्मद ने एक 40 वर्षीय भारतीय व्यक्ति कन्हैयालाल का गला रेत दिया था और उसका विडीयो ऑनलाइन प्रसारित किया था। सर तन से जुदा के नारे लगाते हुए कट्टरपंथियों ने देश में आतंक फैलाया था। घटना में जब कन्हैया लाल ने नुपुर शर्मा की पोस्ट का सपोर्ट किया था जो कि उनके 8 वर्षीय बेटे से गलती से हो गया था तब पड़ौसी नाजिम ने पुलिस में शिकायत दर्ज करवाई थी जिसके बाद पुलिस ने कन्हैया लाल को गिरफ्तार भी किया था। इस मामले में जमानत के बाद कन्हैयालाल ने पुलिस में शिकायत की थी कि, उसे नाजिम और अन्य लोगों द्वारा धमकियां मिल रही है, और आरोप लगाया था कि उसकी फोटो मुस्लिम समुदाय में एक संदेश के साथ फैला दी गई है जिसमें लिखा है कि कन्हैयालाल कहीं भी दिखाई दे तो उसे मार दिया जाए।

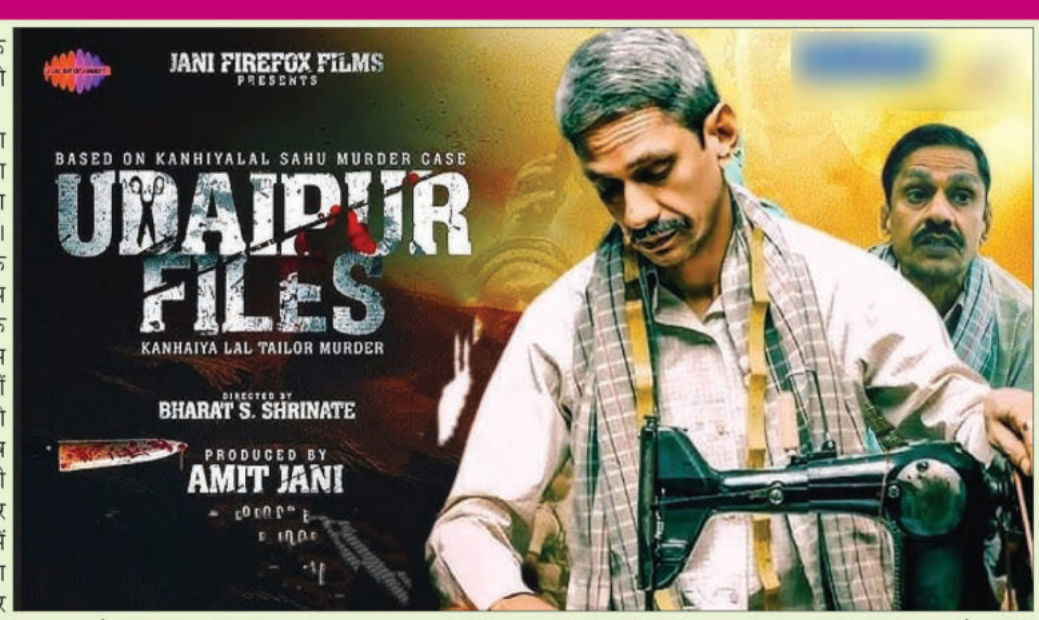

कन्हैयालाल को बहुत ही घृणा के साथ चाकू घोप कर मारा गया और बड़े ही निर्मम तरिके से गला रेतकर उनकी हत्या कर दी गई। अब देश का दुर्भाग्य देखिए कि एक भोलेभाले सीधेसाधे भारतीय दर्जी की निर्मम हत्या कर आतंक फैलाने वाले कट्टरपंथी मुस्लिम पुरुषों की अभी तक गिरफ्तारी नहीं हो पाई है, कन्हैलाल के परिवार को न्याय नहीं मिल पाया है, और अब जब इस सच्चाई को बयां करती एक फिल्म बनाई गई तो उस पर रोक लगाने के लिए हाई कोर्ट में जमीयत उलेमा-ए-हिंद के मुखिया अरशद मदनी ने याचिका दायर कर दी जिस पर दिल्ली हाई कोर्ट ने रोक लगा दी और मामला सुप्रीम कोर्ट पहुंच गया। सुप्रीम कोर्ट ने भी रोक को जारी रखते हुए केन्द्र की समिति के निर्णय की प्रतिक्षा करने के लिए कहते हुए फिल्म उदयपुर फाइल्स पर सुनवाई के लिए अगली दिनांक दे दी। अब सुप्रीम कोर्ट 21 जुलाई को सुनवाई करेगा।

जमीयत उलेमा-ए-हिंद का कहना है कि ऐसी फिल्म के प्रदर्शन से धार्मिक भावना को ठेस पहुंच सकती है, जिससे सांप्रदायिक तनाव बढ़ सकता है। ये वही संगठन है जिसने वर्ष 2007 में एक लीगल सेल गठीत किया था, जिसका उद्देश्य आतंकवाद के आरोप में गिरफ्तार किए गए कट्टरपंथियों को कानूनी सहायता करना है। इस संगठन के वकिल कपील सिब्बल है जो कांग्रेस सरकार में खास मंत्री थे जब प्रधानमंत्री मनमोहनसिंह थे, और कपील सिब्बल वर्तमान में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के हर कार्य के विरोध में कोर्ट पहुंच जाते हैं।

अब प्रश्न यह भी उठता है कि, संगठन, या समुदाय जो नहीं चाहते कि फिल्म का प्रदर्शन किया जाए तो वो क्या कट्टरपंथ या आतंकवाद की समाप्ती नहीं चाहते हैं। ऐसे संगठन क्युं नहीं चाहते की सच्चाई देश के सामने आए अगर सच्चाई को फिल्म के द्वारा दिखाने पर धार्मिक भावनाओ को ठेस पहुंच सकती है तो उस समय ऐसे संगठन कहां चले गए थे जब दो कट्टरपंथी मुस्लिम पुरुषों ने एक भारतीय व्यक्ति कन्हैयालाल की निर्मम हत्या कर दी थी। यदी फिल्म के प्रदर्शन से सांप्रदायिक तनाव बढ़ सकता है तो उस समय क्युं नहीं बढ़ा जब कन्हैयालाल की गला रेत कर हत्या कर दी गई थी।

जमीयत उलेमा-ए-हिंद के मुखिया का कहना है कि उदयपुर फाइल्स फिल्म से सांप्रदायिक तनाव बढ़ सकता है इसका अर्थ तो यहीं हुआ कि फिल्म का प्रदर्शन किया जाएगा तो इस प्रकार के संगठन या कट्टरपंथ का सपोर्ट करने वाले भारत देश में दंगा फसाद कर सच्चाई का विरोध करेगे और देश की शांति को भंग करेगे। यह डर किसे सता रहा है, जमीयत उलेमा-ए-हिंद जैसे संगठन या उनको सहयोग करने वाले राजनीतिक दल जिनके सम्पर्क में कपील सिब्बल जैसे नेता रहते हैं। या उन राजनीतिक पार्टियों को जो देश को बांटने में लगी हुई है, क्योंकि बिहार चुनाव में उदयपुर फाइल्स फिल्म बहुत कुछ कर सकती है।

दो जाहील पुरुषों द्वारा कन्हैयालाल की जघन्य हत्या की गई इस सच्चाई के सामने आने पर डर का महौल बनाने वाले भारत सरकार या न्यायालय को इनडारेक्ट धमकी दे रहे हैं कि उदयपुर फिल्म के प्रदर्शन पर धार्मिक भावना ठेस होगी और सांप्रदियक तनाव बढ़ेगा। देश में जब भी किसी फिल्म पर रोक लगाने की बात आती है तब भारत में पल रही लिबरल गैंग अपने रोना रोने लगती है और भारत में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का ढींढोरा पीटने लगती है परंतु उदयपुर फाइल्स फिल्म जो सच्चाई को समाज के सामने स्पष्ट कर ला रही है उसकी रोक पर लिबरल गैंग की चूं भी नहीं निकल रही है।

रिकेश बैरागी

यहां एक प्रश्न यह भी है कि, कपील सिब्बल फिल्म के माध्यम से सामने आ रही सच्चाई से किसलिए घबरा रहे हैं, वो क्युं नहीं चाहते कि, यह सच सामने आए कि कन्हैयालाल को किसने, क्यों और कैसे मौत के घात उतारा। कुछ संगठन और राजनीति दल इसलिए भी डर रहे हैं क्योंकि उनकी छवि को हानि पहुंचेगी और बिहार चुनाव में इस जघन्य हत्याकांड की सच्चाई सामने आने से विपक्षियों को क्षति पहुंचेगी।

बहरहाल, भारतीयों को भी सच्चाई का विरोध करने वालों का विरोध करना चाहिए अन्यथा तो कट्टरपंथ अपने आतंक का साया फैलाता रहेगा और समाज के सामने सच्चाई आने वाली होगी तो अपने बचाव में सच्चाई को रोकने के लिए विपक्षी वकील नेताओं का सपोर्ट लेकर याचिकाएं दायर करेगे। अतः भारतीयों का कर्तव्य है कि ऐसी सच्चाई बयां करने वाली फिल्मों का प्रदर्शन भारत में किया जाए ताकि हर भारतीय को कट्टरपंथ और उनका सहयोग करने वालों के बारे में पता चले।

कब और कैसे शुरू हुई उज्जैन में महाकाल की सवारी?

माही की गूंज, उज्जैन।

उज्जैन में महाकाल की सवारी भगवान महाकालेश्वर के प्रति श्रद्धा और सम्मान प्रकट करने के लिए निकाली जाने वाली एक विशेष धार्मिक शोभायात्रा है। यह सवारी हर साल श्रावण और भाद्रपद के महीनों में निकाली जाती है जब भक्त भगवान शिव की पूजा करते हैं।इसमें महाकाल की मूर्ति को रथ पर बिठाकर नगर भ्रमण कराया जाता है।

इस सवारी में हजारों भक्त शामिल होते हैं, जो भगवान शिव के दर्शन और उनका आशीर्वाद लेने के लिए उमड़ पड़ते हैं।यह आयोजन भक्तों के लिए एक अद्भुत धार्मिक अनुभव होता है। ऐसे में, क्या आप जानते हैं कि इस सवारी की शुरुआत कैसे और किसने की?

आइए जानते हैं... महाकाल की सवारी का इतिहास

प्राचीन ग्रंथों के अनुसार, महाकाल की सवारी की परंपरा बहुत पुरानी है। इस परंपरा का उल्लेख प्राचीन ग्रंथों में भी मिलता है। राजा भोज ने इस परंपरा को आगे बढ़ाया और इसे नियमित रूप से मनाना शुरू किया। 11वीं शताब्दी में, राजा भोज ने रथों और हाथियों के साथ महाकाल की सवारी को और भी भव्य बना दिया। इसके बाद, मुगल सम्राट अकबर और जहाँगीर ने भी इस शोभायात्रा में भाग लिया और सिंधिया राजवंश के राजाओं ने इसे और भी भव्य रूप में प्रस्तुत किया।

महाकाल शोभायात्रा का आयोजन

महाकाल की शोभायात्रा हर साल सावन और भाद्रपद माह में आयोजित की जाती है। यह शोभायात्रा प्रत्येक माह के कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को निकलती है।हालाँकि, सबसे बड़ी और भव्य शोभायात्रा महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित की जाती है। यह शोभायात्रा महाकाल के भक्तों की भक्ति और श्रद्धा को दर्शाती है। शोभायात्रा में महाकाल के रथ को चाँदी से सजाया जाता है और उसे फूलों से भी सजाया जाता है।

शोभायात्रा का धार्मिक महत्व

महाकाल की शोभायात्रा न केवल एक धार्मिक आयोजन है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण अंग भी है। यह शोभायात्रा उज्जैन नगरी की समृद्ध संस्कृति और विरासत को दर्शाती है।इस शोभायात्रा में कलाकार, संगीतकार और नर्तक शामिल होते हैं, जो इसे और भी रंगीन बनाते हैं। महाकाल की शोभायात्रा की विशेषता यह है कि इसमें तलवारबाज, घुड़सवार और हाथी भी शामिल होते हैं, जो इस शोभायात्रा को और भी भव्य बनाते हैं।लाखों श्रद्धालु महाकाल की शोभायात्रा में शामिल होने के लिए उज्जैन पहुँचते हैं और महाकाल के जयकारों से पूरा परिसर गूंज उठता है। इस अवसर पर भक्त महाकाल का नाम लेते हैं और उन्हें फल, फूल, मिठाई और दूध अर्पित करते हैं। यह शोभायात्रा भगवान महाकाल की शक्ति, महिमा और कृपा का प्रतीक मानी जाती है।

महाकाल की शोभायात्रा में शामिल होने के लाभ

महाकाल की शोभायात्रा में शामिल होने से भक्तों को शांति, सुख और समृद्धि का आशीर्वाद मिलता है। यह अवसर भक्तों को भगवान शिव के निकट लाता है और उन्हें आध्यात्मिक अनुभूति प्रदान करता है।महाकाल के दर्शन व्यक्ति के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाते हैं और उन्हें पापों से मुक्ति दिलाते हैं। शोभायात्रा में भाग लेने वाले भक्त उत्साह से भरे होते हैं। शोभायात्रा मार्ग पर भव्य सजावट की जाती है और वातावरण शिव भक्ति से ओतप्रोत होता है।भगवान महाकाल की मूर्ति को रथ पर विराजमान कर नगर भ्रमण कराया जाता है। इसके साथ ही ढोल-नगाड़ों की ध्वनि और भक्तों के जयकारे वातावरण को और भी दिव्य बना देते हैं।

न्यूज ब्रीफ

24 घंटे में 14.4 मिलीमीटर औसत वर्षा दर्ज

माही की गूंज, अलीराजपुर। अलीराजपुर जिले में बीते 24 घंटे में प्रातः 8 बजे तक 14.4 मिलीमीटर औसत वर्षा दर्ज की गई। तहसीलवार अलीराजपुर में 32.6 मि.मि , जोबट में 9.2 मि.मि ,उदयगढ़ में 6.3 मि.मि, च. शे. आ. नगर में 13.4 मि.मि, कट्ठीवाड़ा में 25.0 मि.मि , सोण्डवा में 0.0 मि.मि कुल 86.5 मि.मि वर्षा हुई।

जिले में 01 जून से 15 जुलाई 2025 तक 544.9 मिलीमीटर औसत वर्षा दर्ज की गई। जिले के अलीराजपुर 568.0 मि.मि, जोबट 339.3 मि.मि, उदयगढ़ 549.5 मि.मि, च. शे. आ. नगर 581.3 मि.मि, कट्ठीवाड़ा 1032.5 मि.मि, सोण्डवा 199.0 मि.मि कुल 3269.6 मि.मी दर्ज की गई ।गत वर्ष इसी अवधि में औसत वर्षा 248.6 मिलीमीटर थी। उक्त जानकारी अधीक्षक भू-अभिलेख द्वारा दी गई।

शासकीय विद्यालय की दीवार गिरी

माही की गूंज, बरझर।

ग्राम पंचायत बरझर में करीब 40 साल पुराने प्राथमिक विद्यालय की दीवार भरभराकर गिर गई। दरअसल, बरझर में अलसुबह से तेज बारिश हो रही थी। इसके कारण पुराने जर्जर भवन की दीवार गिरी। कलेक्टर ने सभी जर्जर भवन गिराने के निर्देश दिए थे। लेकिन जिम्मेदारों ने बरझर के पुराने भवन को गिराने में लापरवाही बरती। भवन के खिड़की, दरवाजे और पतरे निकाल लिए गए। लेकिन दीवारें नहीं गिराई गई। तेज बारिश में दीवार गिरकर समीप के घर पर गिर गई। जिसमें बुसरा पति अरबाज खान को हाथ में चोट आई है। वहीं जयु प्रजापत के मकान पर मलबा गिरा। दोपहर में तहसीलदार जितेंद्र तोमर और बीईओ विनोद कोरी मौके पर पहुंचे और निरीक्षण किया। उन्होंने मौके पर खड़े रहकर दीवार तुड़वाई। साथ ही सचिव को निर्देश दिए कि एसडीएम प्रियांशी भंवर ने निरीक्षण के दौरान जिन भवनों को डिस्मेंटल करने को कहा था उन्हें गिराने का प्रस्ताव बनाकर देने के निर्देश सचिव को दिए।

खाद्य सामग्री एवं अति आवश्यक वस्तु के दुरुपयोग के खिलाफ हुई कार्रवाई

माही की गूंज, अलीराजपुर।

अनुविभागीय अधिकारी सोण्डवा सीजी गोस्वामी द्वारा अति आवश्यक वस्तु एवं मिलावटी सामग्री एवं खाद्य पर्दाथ पर रोकथाम के लिए कार्यवाही की गई। कलेक्टर डॉ. अभय अरविंद बेडेकर के निर्देशानुसार जिले में मिलावटी खाद्य पदार्थों की रोकथाम के लिए आदेशित किया गया था। निर्देशों के परिपालन में सोण्डवा क्षेत्र में संयुक्त जॉच दल द्वारा औचक निरीक्षण किया गया। इस दौरान अंकिता चाय नास्ता एवं किराना से भारी मात्रा में एक्सपायरी बड़ी व छोटी 180 बोतल लगभग नष्ट कि गई तथा 4 घरेलू उपयोग की गैस टंकी एवं 19 लीटर पेट्रोल जप्त कर कार्यवाही की गई। संयुक्त दल में तहसीलदार, कनिष्ठ आपूर्ति अधिकारी रामा अवास्या आदि कार्यवाही के दौरान मौजूद थे।

शिविर में विद्यार्थियों को दी गई कानूनी जानकारी

माही की गूंज, अलीराजपुर। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण अलीराजपुर अनीष कुमार मिश्रा साहब के मार्गदर्शन में पी.एम. शासकीय कन्या हाईस्कूल छकतला एवं शासकीय उ.मा.वि. उमराली में विधिक साक्षरता शिविर का आयोजन किया गया। सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण जय पाटीदार शिविर में साइबर क्राइम के बारे में जानकारी देते हुए बताया साइबर क्राइम कम्प्यूटर और कम्प्यूटर नेटवर्क का उपयोग करके व्यक्तियों, व्यवसायिक समूहों या यहां तक कि सरकारों को भी नुकसान पहुंच सकता है। साइबर क्राइम कई प्रकार के होते है, जैसे - साइबर बुलिंग, साइबर स्टॉकिंग, साफ्टवेयर चोरी, सोशल मीडिया धोखाधडी आदि , साइबर क्राइम से बचने के लिये अविश्वसनीय वेबसाइटों का ओपन नहीं करना चाहिए और अज्ञात फाइलें डाउनलोड करते समय सावधान रहना चाहिए। कभी हमारे साथ साइबर क्राइम हो जाता है तो तुरंत पुलिस को सूचित करना चाहिए। साथ विद्यार्थियों को यातायात नियमों एवं विद्यार्थियों को विधिक सेवा प्राधिकरण, नालसा हेल्पलाईन नंबर 15100 एवं यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण अधिनियम के बारे में विद्यार्थियों को जानकारी दी गई। जिला विधिक सहायता अधिकारी दिलीपसिंह मुजाल्दा, शिविर में विद्यालयों के प्राचार्य एवं अन्य शिक्षकगण व विद्यार्थीगण उपस्थित रहे।

जन-जन को नशे के दुष्प्रभाव एवं जागरूकता लाने के लिए नशे से दूरी है जरूरी अभियान प्रारंभ

माही की गूंज, अलीराजपुर।

जन - जन को नशे के दुष्प्रभाव एवं जागरूकता लाने के लिए पुलिस विभाग द्वारा ''नशे से दूरी है जरूरी'' 15 दिवसीय अभियान के तहत नशा मुक्ति रैली का आयोजन कलेक?टर डॉ अभय अरविंद बेडेकर की अध्यक्षता में किया गया।

इस दौरान पुलिस अधीक्षक राजेश व्यास, मुख्य कार्यपालन अधिकारी प्रखर सिंह, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक प्रदीप पटेल, अनुविभागीय अधिकारी राजस्व तपीस पांडे, डिप्टी कलेक्टर जेपी अग्रवाल, तहसीलदार श्रीमति सविता राठी सहित महिला बाल विकास, खेल विभाग, शिक्षा विभाग सहित अन्य विभाग के अधिकारी एवं कर्मचारी एवं छात्र छात्राएं उपस्थित थे। इस रैली का शुभारंभ कलेक्टर डॉ बेडेकर एवं पुलिस अधीक्षक राजेश व्यास एवं अन्य ने हरी झंडी दिखाकर किया। यह रैली पुलिस कंट्रोल रूम से प्रारंभ होकर दाहोद नाका, झंडा चौक, नीम चौक होते हुए बस स्टैण्ड से जेल चौराहा, टॉकीज चौराहा होते हुए फतेह क्लब पहुंचे।

इस दौरान नशा मुक्ति से संबंधित नारे लगाए गए। इस दौरान महिला बाल विभाग द्वारा बाल भिक्षावृत्ति रोकथाम अभियान के लिए जागरूक किया गया। इस दौरान कलेक्टर डॉ बेडेकर ने उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि नशा एक गंभीर सामाजिक बुराई है। नशा एक ऐसी बुराई है जिससे आज के युवा काफी जल्द नशे की लत के प्रभावित हो रहे, जो कि आने वाले कल के लिए चिंता का विषय है, इन जहरीले और नशीले पदाआर्थों के सेवन से व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक और आर्थिक हानि पहुंचाने के साथ ही इससे सामाजिक वातावरण भी प्रदूषित हो रहा है, इस दुष्प्रभाव को रोकने के लिए हम सभी को प्रयास करना चाहिए ताकि आने वाले बेहतर देश के साथ साथ बेहतर समाज का निर्माण कर सके।

इस कार्यक्रम के दौरान पुलिस अधीक्षक राजेश व्यास ने उपस्थित जन समूह को संबोधित करते हुए बताया कि इस अभियान को आज से जिले में प्रारंभ किया गया है, इस अभियान का मुख्य उद्देश्य युवाओं और लोगों को नशे से दूर करना जो कि सामूहिक प्रयास से ही संभव है। आगामी दिनों में क्षेत्रवार पुलिस विभाग द्वारा अभियान चलाया जाएगा। इस दौरान कलेक?टर डॉ बेडेकर एवं पुलिस अधीक्षक व्यास ने उपस्थित जनसमूह को नशे से दूरी एवं जागरूक करने की शपथ भी दिलाई गई।

रेलवे डीआरएम उज्जैन आये, वीआईपी रूम में तबीयत बिगड़ी

माही की गूंज, उज्जैन।

पश्चिम रेलवे रतलाम मंडल के डीआरएम अश्विनी कुमार बुधवार को उज्जैन आये। यहां आने के बाद अचानक उनकी तबीयत बिगड़ गई। उन्हें तत्काल अवंति हॉस्पिटल ले जाया गया।

बाद में वे महाकाल दर्शन करने गए और सिंहस्थ कार्यों की तैयारी देखी। अश्विनी कुमार बुधवार को सिंहस्थ से जुड़ी रेलवे की तैयारी का प्रजेंटेशन लेने आए थे। उनके साथ जीएम विवेक कुमार गुप्ता भी थे। ये उज्जैन रेलवे स्टेशन के वीआईपी रूम में प्रजेंटेशन देख रहे थे। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार इसी दौरान करीब 11.30 बजे अश्विनी कुमार को चक्कर आया और वे कुछ क्षणों के लिए अचेत हो गए। होश आया तो कहने लगे-मैं कहा हूं। उन्हें तुरंत अवंती अस्पताल ले जाया गया।

जीएम गुप्ता बुधवार को मुंबई से सुबह 7.30 बजे अवंतिका एक्सप्रेस में लगे स्पेशल कोच से उज्जैन पहुंचे थे। यहां आकर उन्होंने सबसे पहले श्री महाकालेश्वर के दर्शन किए। दर्शन के बाद वे सीधे स्टेशन पहुंचे और व्यवस्थाओं का जायजा लिया। यहां उन्होंने स्टेशन के एंट्री-एक्जिट सहित नए प्लेटफॉर्म नंबर 7 सहित अन्य व्यवस्थाओं का जायजा लिया। जीएम गुप्ता ने नए प्लेटफॉर्म नंबर 7 पर यात्री सुविधाएं देखी, इसके बाद प्लेटफार्म नंबर 6, 8 व 1 का भी निरीक्षण किया। उन्होंने निरीक्षण के वक्त साथ चल रहे रतलाम रेल मंडल के डीआरएम अश्विनी कुमार व अन्य वरिष्ठ अधिकारियों से सिंहस्थ के लिए उज्जैन स्टेशन पर जुटाई जा रही यात्री सुविधाओं के बारे में बारीकी से जानकारी ली।

दोपहर बाद जीएम गुप्ता ने नई खेड़ी, पिंगलेश्वर और विक्रमनगर रेलवे स्टेशन का दौरा किया। इन स्टेशनों को सिंहस्थ के लिए विकसित किया जा रहा है। वे रेलवे कर्मचारी संगठनों के पदाधिकारी, जेडआरयूसीसी व डीआरयूसीसी कमेटी के सदस्यों से भी मिले। पश्चात मुंबई के लिये रवाना हो गए।

सांसद अनिल फिरोजिया ने सुविधाएं बढ़ाने का कहा

मंगलवार दोपहर रेलवे स्टेशन के कांफ्रेंस हॉल में सांसद अनिल फिरोजिया ने जीएम गुप्ता से करीब आधे घंटे चर्चा की। इस दौरान उन्होंने सिंहस्थ के मद्देनजर उज्जैन व आसपास के स्टेशनों पर रेलवे सुविधाएं बढ़ाने की मांग रखी । सांसद ने उज्जैन आने वाले यात्रियों की संख्या में इजाफा होने के कारण यहां यात्री सुविधाएं और नई ट्रेनों को उज्जैन स्टेशन से जोडने का कहा। इंदौर-उज्जैन के बीच ट्रेन सुविधाएं बढ़ाने पर भी चर्चा हुई।

विधायक की पहल से छात्रावासों में निष्पक्ष प्रवेश प्रक्रिया संपन्न

माही की गूंज, जोबट।

जोबट में आयोजित एक विशेष बैठक में क्षेत्र के छात्रावासों की रिक्त सीटों पर विद्यार्थियों का चयन पारदर्शी प्रक्रिया से किया गया। जिसमें पहली बार राजनीतिक हस्तक्षेप या सिफारिश का कोई स्थान नहीं रहा।

विधायक सेना महेश पटेल स्वयं चयन प्रक्रिया में उपस्थित रहीं और उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि चयन पूर्णतः योग्यता और ज़रूरत के आधार पर हो। सबसे पहले विकलांग, अनाथ और अत्यंत गरीब बच्चों को वरीयता दी गई, इसके बाद शेष सीटें मेरिट लिस्ट से भरी गईं। विधायक श्रीमती पटेल ने कहा, ÷शिक्षा सभी का अधिकार है। हमने यह तय किया है कि अब छात्रावासों में प्रवेश सिर्फ सच्ची पात्रता पर होगा, न कि किसी सिफारिश से।÷ उन्होंने आगे कहाः ÷हर साल कई बच्चों को जगह नहीं मिल पाती। अब जब सीटें सीमित हैं, तो मैं सरकार से मांग करूँगी कि सीटों की संख्या बढ़ाई जाए। चयनित बच्चों की सूची लेकर मैं खुद छात्रावासों का निरीक्षण करूँगी।÷ जनता और अभिभावकों ने इस पहल का खुले दिल से स्वागत किया। कई अभिभावकों ने बताया कि वर्षों बाद किसी चयन में इतनी पारदर्शिता और निष्पक्षता देखने को मिली है। इस बैठक में जनपद अध्यक्ष, जनपद सदस्य, सरपंचगण और अन्य जनप्रतिनिधि भी मौजूद रहे और प्रक्रिया की निष्पक्षता को सराहा।

हर घर लगाएं पेड़ आपकी जवाबदेही

माही की गूंज, धार।

पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री प्रहलाद सिंह पटेल ने कहा कि, ग्रामीण विकास एक बड़ी जिम्मेदारी है, जिसे पंचायत प्रतिनिधियों को नियत और न्याय की भावना से स्वीकार करना होगा। वे धार में आयोजित पंचायत प्रतिनिधि सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। मंत्री प्रहलाद सिंह पटेल ने बताया कि सांसद रहते हुए उन्होंने सदैव कृषि और ग्रामीण विकास विषयक संसदीय समितियों में रहकर देश भर में इन विषयों को गहराई से समझने का प्रयास किया। अब प्रदेश में मंत्री के रूप में उन्हें इन नीतियों को लागू करने का अवसर मिला है। उन्होंने पंचायत प्रतिनिधियों से आग्रह किया कि अपने क्षेत्रों में चल रहे विकास कार्यों, वृक्षारोपण और योजनाओं का रिकॉर्ड पारदर्शिता से रखें।

'एक पेड़ माँ के नाम'

अभियान का आव्हान मंत्री पटेल ने कहा कि मध्यप्रदेश नदियों का मायका है, लेकिन जल संकट की आहट को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। जल संरक्षण हेतु वृक्षारोपण ही सबसे स्थायी उपाय है। उन्होंने ÷एक पेड़ माँ के नाम÷ अभियान के तहत व्यापक पौधारोपण का आह्वान किया और कहा कि ÷जो पौधा आप लगाते हैं, उसकी देखभाल आपकी व्यक्तिगत जवाबदेही है।÷ स्व-सहायता समूहों की भागीदारी उन्होंने बताया कि ÷वृक्षारोपण अभियान 2025÷ में महिला स्व-सहायता समूहों की सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित की गई है, जिससे पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ महिला सशक्तिकरण और आजीविका संवर्धन को भी बल मिलेगा।

पंचायत भवनों और सड़कों को मिलेगी मजबूती

मंत्री पटेल ने जानकारी दी कि पुराने, जीर्ण-शीर्ण पंचायत भवनों को तोड़कर 48 लाख और 37 लाख रुपये की लागत से नए भवनों की मंजूरी दी गई है। कोई भी पंचायत अब भवन विहीन नहीं रहेगी। धार जिले में इस वर्ष 81 पंचायत भवन और 85 पुलियों के निर्माण की स्वीकृति दी गई है। साथ ही, चौथे चरण की प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना के अंतर्गत अब मजरे-टोले को भी जोड़ा जा सकेगा, जिसके लिए राजस्व ग्राम की शर्त हटा दी गई है।

केंद्रीय राज्यमंत्री और जनप्रतिनिधियों ने की अपील

कार्यक्रम में केंद्रीय राज्यमंत्री सवित्री ठाकुर ने कहा कि पंचायत प्रतिनिधि सरकार की योजनाओं को गाँव-गाँव तक पहुँचाने का कार्य करें और प्रधानमंत्री के विकसित भारत के संकल्प को पूरा करने में जुट जाएँ। सम्मेलन में अतिथियों द्वारा उत्कृष्ट कार्य करने वाले पंचायत प्रतिनिधियों को सम्मानित भी किया गया।

सम्मेलन में जिला पंचायत अध्यक्ष सरदार सिंह मेढ़ा, विधायक नीना वर्मा और कालूसिंह ठाकुर, पूर्व मंत्री राजवर्धन सिंह दत्तीगांव,नीलेश भारती व चंचल पाटीदार ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम में कलेक्टर प्रियंक मिश्रा ने स्वागत भाषण दिया तथा जिला पंचायत सीईओ अभिषेक चौधरी सहित बड़ी संख्या में सरपंच व पंच उपस्थित रहे।

थोथा चना बाजे घना उर्फ नशा मुक्ति अभियान

जिस तरह ''नशे से दूरी, है जरूरी'' उसी तरह शराब माफियाओं से भी दूरी है जरूरी...

माही की गूंज, झाबुआ। मुजम्मिल मंसूरी

इसे दुर्भाग्य ही कहेंगे कि प्रदेश और जिले में सरकार और तंत्र दशकों से एक राग अलापते आ रहे है ''नशा मुक्ति अभियान'' का, मगर नतीजे दशकों बाद भी मिथक ही साबित हो रहे है। असल में ''नशा मुक्ति अभियान'' ही पूरी तरह से मिथक है। सरकारें और तंत्र इसे लेकर कितने चिंतित या सक्रिय है यह इसी बात से अंदाजा लगाया जा सकता है कि, साल में महज 15 दिनों का नशा मुक्ति अभियान चलाकर वे इस नशे को जड़ मूल से खत्म करना चाहते है। यह बात पूरी तरह से हास्याप्रद है और सरकार व तंत्र को हसी का पात्र बनाती है। साल के 365 दिनों में केवल 15 दिन किसी एक विषय पर काम करना और यह उम्मीद करना कि, इसके अच्छे परिणाम मिलेंगे तो यह किसी बुद्धीहीन और दिवालिया विचार धारा को प्रदर्शित करता है। क्योंकि अगर नशा मुक्ति को लेकर वाकई सरकार या तंत्र कृतसंकल्पित होते तो भले ही पूरे देश में ना सही लेकिन प्रदेश या जिले में कम से कम शराब बंदी तो कर ही सकते थे। मगर ऐसा कुछ भी अब तक होता दिखाई नहीं दिया। इसलिए हम तो यही कहेंगे कि प्रदेश व जिले में नशा मुक्ति अभियान उतना ही जितना थोथा चना।

वजह बहुत सारी है मगर यह तय है कि, सरकारें अपने राजस्व के एक बहुत बड़े हिस्से का त्याग नहीं करना चाहती। यह बात किसी से छुपी नही है कि, शराब ठेकों के जरिये सरकारों को करोड़ों नहीं अरबों या खरबों रुपये का राजस्व प्राप्त होता है। और इसीलिए प्रदेश की सरकारें आमआदमी को नशा मुक्त नहीं कर सकती या करना नहीं चाहती। क्योंकि अगर प्रदेश में नशामुक्ति अभियान कामयाब हो गया तो प्रदेश सरकार को अरबों -खरबों रुपये के राजस्व का नुकसान हो जाएगा। इसीलिए आमजन की जान से खिलवाड़ करते हुए नशा मुक्ति अभियान का ढकोसला हर साल किया जाता रहा है।

यह तो हो गई सरकारों की बात लेकिन जिले में बैठा तंत्र किसी सरकार से कम तो नहीं है। यह जग जाहिर है कि, जिले के आला अधिकारी इस नशा मुक्ति अभियान को सिर्फ अपने तमगे बढ़ाने के लिए इस्तेमाल करते रहे है। आमजन से इसका कोई सरोकार नहीं है। कारण यह कि जब जिले में सरकार खुद अरबों रुपये के शराब ठेके निलाम करती है तो यह कैसे मुमकिन है कि, तंत्र में बैठे आला अधिकारी इसे बंद कर सके। अधिकारियों के केवल अपने स्वार्स्थ है, वे केवल अपना सर्विस रिकार्ड बेहतर करने की कवायदों में है। राजनेताओं, नेताओं और आला अधिकारियों को भी यह पता है कि, अगर जिले या प्रदेश को नषा मुक्त कर दिया तो कितना नुकसान होगा! तो फिर यह तय है कि, 15 दिनों का यह नशामुक्ति अभियान सरकार और तंत्र की ओर से सिर्फ और सिर्फ ढकोसला ही है। यह सही है कि, नशे के कई मानक है लेकिन इसमें मुख्य तो शराब ही है। प्रदेश में बैठे राजनेताओं, नेताओं और मंत्रियों के लिए यह सिर्फ अपनी राजनीति चमकाने का अवसर मात्र है, तो अधिकारियों के लिए यह कॅरियर चमकाने का जरिया।

पश्चिमी मध्यप्रदेश के छोर पर बसे आदिवासी बाहुल जिले में नशा मुक्त समाज का सपना हमेशा से ही दिवास्वप्न रहा है। इसका मुख्य कारण खुद सरकार और सरकारी तंत्र है। जिले में आने वाला हर बड़ा अधिकारी इन जिलों को सोने की खान मानकर ही यहां आता है और दोनों हाथों में लड्डू लेकर निकल जाता है। इस बात के लिए किसी प्रमाण की जरूरत नहीं है। इतिहास भरा पड़ा है कि, जिले में कैसे -कैसे अधिकारी आए और कैसे-कैसे गुल खिलाकर गए, फिर चाहे वह आईएएस अधिकारी हो या आईपीएस अधिकारी। सब ने इस जिले में खूब मलाई मारी है, चाहे वह आर्थिक समृद्धि की हो या अपने सर्विस रेकार्ड को चमकाने की। कुल मिलाकर ऐसे अधिकारियों ने जनता के सरोकार को ताख में रखकर सिर्फ और सिर्फ अपना उल्लू ही सीधा किया। कई आईपीएस अधिकारियों ने यहां ऐसे काम किए जो कभी उनके थे ही नहीं। अपराध नियंत्रण की बजाय जंगलों को संवारने में अपना टाइम पास किया। बावजूद इसके उन्हे उस चीज का इनाम भी मिला जो उनके कार्यक्षेत्र का था ही नहीं। अपराध नियंत्रण की जगह पौधारोपण से ही अपने तमगे चमका लिए गए। मगर जिले की कानून व्यवस्था इन अधिकारियों के कार्यकाल में ढाक के तीन पात ही साबित हुई। जिले की पुलिस और माफियाओं का गठबंधन यहां हमेशा इतना मजबूत रहा है कि, सरकारों को अरबों रुपये का राजस्व देने के बावजूद माफियाओं ने पुलिस अधिकारियों के वारे-न्यारे कर दिए है। वैसे तो यह आम बात है कि, पुलिस की झोली कभी माफियाओं ने खाली नहीं रहने दी। मगर कुछ अधिकारियों की माफियाओं से नजदीकियां इतनी सुर्खियों में रही कि उन्होने जितना नाम पूरी सर्विस में नहीं कमाया वह यहां इस जिले में माफिया से गठजोड़ कर कमा लिया। इसी तरह के अधिकारियों ने जिले की आमजनता को यह भी बताया कि पुलिस और माफियाओं का हमेशा ही चौली दामन का साथ रहा है।

इसी तरह आईएएस अधिकारियों के भी कई रिकार्ड यहां के इतिहास में दर्ज है। कई कलेक्टर यहां फर्जी वाड़े कर चुके है। जिले से रवानगी के बावजूद इन आईएएस अधिकारियों के नाम बड़े घोटालों में शामिल होते नजर आए और मामले न्यायालय तक पहुंचने के बाद वे झाबुआ न्यायालय में अपराधियों की तरह खड़े दिखाई दिए और उन्हे सजा भी सुनाई गई। झाबुआ जेल भी इस बात की गवाह बनी। कुछेक कलेक्टर को अब भी जिले में हुए घोटालों के लिए नोटिस भेजे जाते रहे है। यह और बात है कि, वे अब अपनी सर्विस से ही रिटायर्ड हो चुके है। मगर यह इतिहास लिखा जा चुका है कि यहां आने वाले अधिकारी किस तरह से जिले की जनता का हक मारते है और गरीब के मुंह का निवाला छीनकर अपनी जेबे भरते है। जिले में माफियाओं से कलेक्टारों की नजदीकियां भी जग जाहिर है। जिले में आए एक आईएएस अधिकारी ने कोविड काल में सारे नियमों की धज्जियां उड़ते हुए अपनी बहन की शादी की और इस शाही शादी का पूरा इंतेजाम शराब माफियाओं ने किया। सोने पर सुहागा यह रहा कि कलेक्टर साहब की बहन को तौहफे के तौर पर माफिया ने लाखों रुपये का लक्जरी वाहन गिफ्ट कर दिया। यह सारा मामला उक्त कलेक्टर के जिले में रहते हुए ही हुआ। यह पहला मौका था जब किसी कलेक्टर के घर की शादी ने इतनी सुर्खिया बटोरी थी। जिले की जनता के सामने यहां यह खुलकर साबित हो गया था कि, आईएएस अधिकारी और माफियाओं का गठजोड़ फेवीकोल के जोड़ से भी मजबूत है।

अब वर्तमान स्थिति को देखें तो परिस्थितियां कुछ इसी तरह के इशारे देती नजर आ रही है। वर्तमान हालात भी पूर्व अधिकारियों वाले ही दिखाई दे रहे है। लगता है इतिहास फिर से दोहराया जा रहा हो। जिले में वर्तमान अधिकारी भी वही सब कर रहे है जो पूर्व में रहे अधिकारियों ने किया। ऐसे दिवस मनाए जा रहे है जो जिले की जनता ने कभी सुने ही नहीं हो, मगर मकसद तो सिर्फ सुर्खियां बटोरने और सर्विस बुक के नंबर बढ़ाने का है। पौधरोपण कर फोटो खिंचवाए जा रहे है, अखबारों में बने रहने की कवायदें की जा रही है, ताकि वरिष्ठ अधिकारियों, नेताओं, मंत्रियों की नजरों में आ सके। कई तरह के अभियान चलाए जा रहे है, जिनका अधिकारियों के कार्यक्षेत्र से कोई लेना-देना ही नहीं है। कभी जिले की संस्कृति के साथ खिलवाड़ कर सुर्खियां बटोरी जा रही है तो कभी आम लोगों के बीच पहुंचकर सामाजिक होने का ढकोसला किया जा रहा है। अपने कर्तव्यों के इतर वह सबकुछ किया जा रहा है जो सुर्खियों में बनाए रखने के लिए जरूरी है। रही बात गठजोड़ की तो हमारा कोई दावा नहीं है। यह समय चक्र है जो चल रहा है और हमे आगे भी समय ही बताएगा। मगर जिस तरह से ''नशे से दूरी, है जरूरी'' उसी तरह शराब माफियाओं से तंत्र की दूरी भी है जरूरी। वरना पूरी कहानी तो हम लिख ही चुके है। सरकार और तंत्र का 15 दिन का ''नशामुक्ति अभियान'' सिर्फ और सिर्फ मिथक ही है।

वैसे परिस्थितियों में सिर्फ एक ही बदलावद देखने को मिल रहा है। वह यह कि पहले अधिकारियों के इशुस जब मीडिया में उठते थे तो अधिकारियों की तरफ से कोई प्रतिक्रिया देखने को नही मिलती थी। मगर वर्तमान में अधिकारियों के खिलाफ या उनके तंत्र के खिलाफ जाने पर अब मीडिया पर कैमरे से नजर रखी जाती है, प्रशासन यह जानने की कोशिश करता है कि कौन क्या कर रहा है। पुलिस, मीडिया से जुड़े लोगों के इशुस ढूंढती फिरती है। अधिकारियों की मंशा हमेशा मीडिया के गले में पट्टा डालकर उसे पालतू बनाने की दिखाई देती है। इसके उलट जिला मुख्यालय पर मौजूद हर सरकारी कार्यालय की स्थिति इतनी खराब है कि आमजन इस बात से वाकिफ है कि कब, कहां, किसकी जेब में कितना डालना पड़ेगा। अधिकारियों की तो यह लत किसी नशे की तरह ही है, मगर अब धीरे-धीरे यह आमजन के लिए भी आदत बनता जा रहा है। क्या इस नशे का कोई हल सरकार या तंत्र को दिखाई पड़ता है...? या फिर इसके लिए भी एक दिवस मना ही लेना चाहिए...

समाज की एकता का यह कैसा प्रदर्शन जिसमें किसी की बेटी को किया जाए बदनाम...?

माही की गूंज, झाबुआ।

यह सही है कि, कौन कितना कहा गलत है और कितना सही जिसका सटीक आकलन पूरी तरह से कोई नहीं कर सकता है। उक्त आकलन के फेर में अगर किसी की बेटी व उससे जुड़े परिवार की बात मान मर्यादा की बात हो तो ऐसे में बात कितनी सही या कितनी गलत इस आकलन के पूर्व प्रत्येक समाजजनों, प्रत्येक बुद्धिजीवियों व प्रमुखों का दायित्व है कि, हम ऐसा कोई कृत्य समाज की एकता का प्रदर्शन करने के नाम पर न करें जिसमें किसी की बेटी को बदनाम सार्वजनिक रूप से किया जाए। क्योंकि यह एकता का प्रदर्शन ऐसे विघ्न संतोषीयो के द्वारा किया जा सकता है जो समाज के नाम व एकता का सहारा लेकर निजी द्वेष-भावना को सिद्ध करने का प्रयास अक्सर होता है। ऐसे में ऐसे विघ्न संतोषी किसी की बेटी के भविष्य व मान -सम्मान को ताक में रख परिवार को बदनाम, जहा समाज की एकता के नाम पर प्रदर्शन किया जाता है। ऐसे वाकिये को किसी भी स्थिति में सही नहीं कहा जा सकता है।

अगर हम बात करें उन पोर्न वेब सीरीजों की जिसमें पूरी तरह से रिश्तो को तार-तार कर दिया है। जिसका कहीं न कहीं हम, हमारे समाजों में असर देखते हैं और ऐसे कई वाकिये हुए हैं जिसमें बुआ-भतीजे हो, भाई -बहन हो, देवर- भाभी हो, मामी-भानेज हो आदि ऐसे सभी रिश्तों को कलंकित किया जाने लगा है। जो कहीं न कहीं भारतीय संस्कृति में बहुत बड़ा सेंध है। वहीं दूसरी ओर अगर हमारा समाज भी आगे होकर समाज की एकता के प्रदर्शन के नाम पर किसी बेटी को बदनाम कर सरे चौराहे पर लाकर खड़ा करने लग जाएगा तो हम हमारी बेटियों की मर्यादा व मान सम्मान को कैसे बचा पाएगा...? यह एक यक्ष प्रश्न है। ऐसे में हमें उन विघ्न संतोषियों को परखना होगा जो समाज की एकता का प्रदर्शन करने के नाम पर ऐसे घृणित कृत्य कर दिये जाते हैं।

ऐसा ही एक घृणित कृत्य किसी विघ्न संतोषी ने समाज की एकता का प्रदर्शन करने के नाम पर ढ़कोसला किया और एक सभ्यपरिवार की बेटी को बदनाम करने का कृत्य किया गया। उक्त कृत्य जिले के थांदला ब्लॉक के उस गांव का है जो गुजरात सीमा से सट्टा है और पुलिस थाना होकर एक समाज 40 से 50 घर होने का दावा करता है।

जानकारी अनुसार यहां यह सामने आया कि, उक्त बहुसंख्यीय व समृद्ध समाज का ही एक व्यक्ति है जो की एक निजी स्कूल का संचालक भी है और घृणित विचारधारा का होकर जब भी कोई मौका मिलता है वह व्यक्ति गांव के वातावरण को बिगाड़ने में कोई संकोच नहीं करता है... यह बात गांव के व्यक्तियों द्वारा ही कहीं जा रही है।

मामला यह हुआ कि, यहां कोई असामायिक मामला हुआ ही नहीं और शंका के आधार पर मामले को बढ़ावा देकर समाज की एकता का प्रदर्शन कर अपने ही समाज की एक बेटी को बदनाम करने का घृणित कृत्य किया गया।

मामले में यह सामने आया कि, एक ही मोहल्ले के एक शादीशुदा अन्य समाज का लड़का एवं गांव के बहुसंख्यीय समाज की एक लड़की के बीच अनैतिक संबंध होने का दावा कर एक स्थानीय एवं सामाजिक स्तर पर बैठक कर गांव में समाज की एकता का प्रदर्शन कर यह प्रयास किया कि, लड़के एवं पिता परिवार से कोई संबंध गांव का यह बहुसंख्यीय समाज का परिवार सामाजिक, धार्मिक व निजी संबंध किसी प्रकार का नहीं रखेगा। न ही किसी आयोजन में उस परिवार को बुलाया जाएगा। उक्त निर्णय की चर्चा को घृणित विचारधारा वाले विघ्न संतोषी निजी स्कूल संचालक एवं चहेतो ने पूरे गांव में प्रचारित किया। उक्त घिनोने कृत्य से मामला यह हुआ की गांव में अन्य सभी समाज के लोग उस एक विघ्न संतोषी के कारण उस समाज का विरोध करने की बात करने लग गए...! हकीकत में मामला क्या सही था क्या गलत था यह तो या तो भगवान बता सकता है या फिर वह लड़की, लड़का व उनका परिवार ही बता सकता है। लेकिन इन समाज के ठेकेदारों ने समाज की एकता का प्रदर्शन कर अपने समाज की ही उस बेटी को अपने गांव में ही नहीं वरन इनके पूरे समाज में भी बदनाम कर घिनाना कृत्य किया गया।

अगर समाज के ठेकेदारों को कोई चिंता थी तो वास्तविक रूप से करना यह था कि, अपने समाज की बेटी व परिवार के साथ किसी द्वारा कोई गलत कृत्य वास्तविक रूप से किया गया था। तो उस बेटी के परिवार के पास जाते उनको ढांडस बंधाते, अपराध जैसा कोई मामला था तो अपराध दर्ज करवाते, और अपराध जैसा कोई मामला नहीं था तो दोनों परिवार की शंका का समाधान करने हेतु लड़के पक्ष के पास जाते और गलती होने पर अपनी बात करते । और वास्तविक गलती होने पर भी अगर अपनी गलती वो नहीं मानते तो, अपना आक्रोश वही पर जताते। तो शायद यह समाज का सहयोग उस बेटी व परिवार के लिए सार्थक व सही होता। और एक बेटी व परिवार आज बदनामी के इस कलंक से बचता। लेकिन जो एक स्कूल का संचालक है और उसके नेतृत्व में समाज की एकता का प्रदर्शन कर यह घृणित कृत्य किया गया और समाज के सम्मान को ठेस पहुचाने वाला यह संचालक अपनी स्कूल के बच्चों को किस तरह की शिक्षा प्रदान कर पाएगा...? यह भी विचारणीय है।

जबकि बताया जा रहा है कि, एक मोहल्ले में होकर लड़के व लड़की दोनों परिवार की आपसी में बहुत ही अच्छे संबंध है और सामान्यतः रूप से उस अच्छे संबंधों के चलते ही वह लड़के व लड़की भी आपस में दोनों परिवार के मध्य भी सार्वजनिक बात चीत करते थे। लेकिन उक्त बातचीत को गलत नजरिए से देखा जा कर इस माहौल को अन्य दिशा दी गई। और बात दोनों परिवार की मान-मर्यादा व प्रतिष्ठा को धूमिल कर एक बेटी के मान व भविष्य के साथ खिलवाड़ किया गया जो विचारणीय व चिंतनीय है...!

हम हमारी कलम से यही संदेश देना चाहते हैं कि, समाज का ठेकेदार बनना गलत नहीं पर किसी बेटी की अस्मिता की बात आए तो वहां हमें अपनी संवेदनशीलता दिखाना चाहिए। न कि अपने निजी द्वेषभाव के चलते ऐसे वाकियो को मोहरा बनाकर घृणित कृत्य करने का कार्य नहीं करना चाहिए।

गुजरात की घटना से सबक नहीं लिया तो यहां भी पड़ सकती हैं इंसानी जान खतरे में

क्षेत्र के कई बड़े पुलों की हालत जर्जर, रेलिंग की हालत खराब, रख रखाव में लापरवाही

पम्पावती नदी पेटलावद का वर्षो पुराना जर्जर पुल ओर जर्जर रेलिंग।

– बामनिया के निकट लाड़की नदी पर बने पुल की रेलिंग की स्थिति जर्जर।

माही की गूंज पेटलावद। राकेश गेहलोत

विगत दिनों गुजरात के बड़ोदा-आणद मार्ग पर हुए पुल हादसे में 19 लोगो की जान चली गई। इस हादसे के बाद क्षेत्र में बने पुराने और बड़े पुलों की जर्जर स्थिति के चलते इन पुलों से गुजरने वालो को बड़े हादसे का डर सताने लग गया है। इन पुलों के निर्माण को वर्षो हो गए हैं और इनकी स्थिति गम्भीर हो चली है, कही पुल की हालत खराब है तो कही पुलों की रेलिंग की स्थिति गम्भीर है। इन पुलों के रख रखाव को लेकर सम्बंधित विभाग लापरवाही बरत रहे है जिससे बड़ी दुर्घटना का डर बना हुआ है ।

पम्पावती, मधुकन्या, लाड़की और माही नदी के पुल जर्जर स्थिति में

नगर के थांदला-बदनावर मार्ग पर बने पम्पावती नदी पर वर्षो पुराना पुल जर्जर स्थिति में है,पुल पुराना होने से इसके सरिए बहार आ गए हैं फिलहाल पुल पर डामर रोड बने होने से पुल की जर्जर स्थिति सामने नहीं दिख रही है लेकिन पुल अब इतना मजबूत नहीं रहा है, मार्ग से भारी वाहनों की बड़ी संख्या में आवाजाही है। पुल की रेलिंग भी पुरानी होकर जगह जगह से टूट चुकी हैं । बामनिया-रतलाम मार्ग पर स्थिति लाडकी नदी और झाबुआ-रतलाम की सीमा को जोड़ने वाली माही नदी के पुल से गुजरने वाले वाहनों को हमेशा दुर्घटना का भय बना रहता है ।

झाबुआ-रतलाम जिले को जोड़ने वाली माही नदी के पुल की जर्जर स्थिति।

लाड़की नदी का पुल ठीक ठाक हालत में है लेकिन यहां सीमेंट के खम्बे से बनी रेलिंग की स्थिति जर्जर हो चुकी हैं और कई जगह से टूटी हुई हैं। माही नदी पर बने पुल की स्थिति तो ओर भी भयावाह है यहां पुल की स्थिति भी उतनी बेहतर नही है जैसी होनी चाहिये और पुल की रेलिंग तो लगभग टूट कर खत्म हो चुकी हैं। आलम ये है कि, यहां कोई गलती से माही नदी दर्शन के लिए रेलिंग के सहारे खड़ा हो जाये तो रेलिंग के टूटने का भय रहता है।

मधुकन्या नदी के पुल के सरिये दिखने लगे

पेटलावद से झकनावदा को जोड़ने वाली मधुकन्या नदी पर बने पुल की स्थिति भी खराब हो चुकी हैं ,वर्षो पुराना पुल अब जर्जर हो चुका है और पुल में लगे सरिए उखड़ कर बाहर आ चुके हैं। यहां से गुजरने वाले वाहनों को डर के साये में पुल पार करना पड़ता है। गुजरात मे हुई पुल टूटने की घटना यहां के जिम्मेदारो के लिए कोई सबक लेकर आती नही दिख रही हैं और पुलों की स्थिति गम्भीर होने के बाद भी उनके मेंटेनेंस पर ध्यान नही दिया जा रहा है ।

वाहनों के बढ़ते दबाव से बिगड़ रही पुराने पुलों की स्थिति

इन सभी पुलो के निर्माण को लंबा अंतराल हो चुका है तब वाहनों का दबाव इतना नहीं था लेकिन वर्तमान स्थिति में भारी वाहनों की बढ़ती संख्या से इन पुलों स्थिति बिगड़ती जा रही है।

झकनावदा में स्थित मधुकन्या नदी पर बने पुल की जर्जर स्थिति बहार निकले सरिए।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, अलका भटेवरा द्वारा काम्पेक प्रिन्टर्स प्रायवेट लिमिटेड, 3/54, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 499, बाजना मार्ग, गणेश मंदिर के सामने, खवासा, तहसील थांदला, जिला-झाबुआ (म.प्र.) से प्रकाशित। प्रधान संपादक- संजय भटेवरा। मोबाइल नं. -95898-82798 (सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र झाबुआ रहेगा) आरएनआई नंबर- एमपीएचआईएन/2018/76422